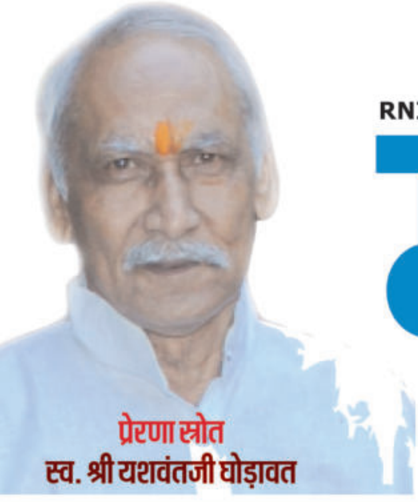
प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

RNI No. MPHIN/2018/76422

माही की गूंज

बेबाकी के साथ... सच

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

वर्ष-08, अंक - 21 (साप्ताहिक) | खवासा, गुरुवार 26 फरवरी 2026 | पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

सुविचार

तपस्या केवल जंगल में नहीं होती, गृहस्थ जीवन में संयम और सेवा के साथ रहना वनवास से भी बड़ी तपस्या है।

प्रेमानंद जी महाराज

तोल-मोल कर बोले माननीय

माही की गूंज, झाबुआ डेस्क।

संजय भटेवरा

जनप्रतिनिधि का एक सम्मानीय पद होता है और जनप्रतिनिधि से यह अपेक्षा की जाती है कि, वो अपने मन, वचन और कर्म से समाज में एक आदर्श प्रस्तुत करें। क्योंकि वो केवल एक नेता नहीं होता है बल्कि क्षेत्र के लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाला एक जिम्मेदार जनप्रतिनिधि होता है और उसकी आवाज को पूरे प्रदेश व देश की जनता सुनती है। लेकिन पिछले दिनों मध्य प्रदेश के मंत्रियों ने भाषाई मर्यादा का उल्लंघन करके न केवल अपनी सरकार की किरकिरी की वरन विपक्ष को भी हमलावर होने का मौका दे दिया।

प्रदेश के कद्दावर नेता कैलाश विजयवर्गीय जिन्हें कभी मुख्यमंत्री पद का दावेदार भी माना जाता था, ने एक बार नहीं बल्कि एक से अधिक बार अमर्यादित शब्दों का उपयोग करके अपनी ही नहीं बल्कि अपनी पार्टी की भी किरकिरी करवा ली। जिसके बाद मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस ने पूरे जोर से मुद्दे को उठाया और विधानसभा में संबंधित मंत्री को न बोलने देने के लिए कड़ा विरोध दर्ज कराया।

इसी प्रकार एक अन्य वरिष्ठ मंत्री विजय शाह द्वारा भारतीय सेना के जिम्मेदार पद पर बैठी महिला अधिकारी के लिए अशोभनिय शब्दों की आग भी अभी तक ठंडी नहीं पड़ी है और मामला कोर्ट में है। मंत्री जी एक से अधिक बार माफी मांग चुके हैं।

लेकिन कांग्रेस अभी भी आक्रामक बनी हुई है जिसके बाद सरकार बैकफुट पर नजर आ रही है। संगठित और अनुशासित पार्टी का दावा करने वाली भाजपा में ऊपरी तौर पर सब कुछ सही और ठीक-ठाक चलने का दावा किया जा रहा है। लेकिन भाजपा के कुछ वरिष्ठ नेता आए दिन कुछ न कुछ विवादित बयान देकर यह साबित कर रहे हैं कि, भाजपा सरकार में सबकुछ ठीक नहीं चल रहा है। यही नहीं कई वरिष्ठ नेता अपनी ही सरकार में नौकरशाही हावी होने का आरोप लगा रहे हैं।

विधानसभा सत्र में मंत्रियों के पसीने छूटे

वर्तमान में जारी बजट सत्र के दौरान विधायकों के प्रश्नों पर कई बार मंत्री असहज नजर आए। यही नहीं मंत्रियों पर सदन में गलत जानकारी देने के आरोप भी लगाए गए, जो मंत्रियों की आधी-अधूरी और अपर्याप्त तैयारी को दर्शाता है। विपक्ष के नेता ने लाडली बहना योजना के नए रजिस्ट्रेशन कब किए जाएंगे इसकी तारीख पूछी तो, महिला बाल विकास मंत्री निर्मला भूरिया कोई निश्चित तारीख नहीं बता पाई। वहीं थांदला विधायक वीरसिंह भूरिया द्वारा अतिथि शिक्षकों को मानदेय न मिलने संबंधी प्रश्न पर मंत्री जी संतोषजनक उत्तर नहीं दे पाए। पंजीकृत बेरोजगार संबंधी प्रश्न पर भी संतोषजनक जवाब संबंधित मंत्री जी नहीं दे पाए। ऐसा एक नहीं कई प्रश्नों को लेकर मंत्री जी अगल-बगल झांकते नजर आ रहे हैं। जिसके बाद आम जनता में यही चर्चा है कि, भले ही अनुशासन का दावा करने वाली भाजपा सरकार में सब कुछ ठीक चलने का दावा किया जा रहा है लेकिन लगातार अमर्यादित बयान, सदन में मंत्रियों की ठोस तैयारी न होना, अधिकारियों पर मनमानी के आरोप ऐसे कई उदाहरण है। जिसके बाद यह कहा जा सकता है कि, अंदर सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है, अंदर ही अंदर असंतोष की चिंगारी भड़क चुकी है।

वहीं अगर मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस की बात की जाए तो, बजट सत्र के दौरान विपक्षी विधायकों ने कई मौके पर सरकार को घेरने का सफल प्रयास किया। विपक्ष के नेता उमंग सिंगार ने विपक्ष की आवाज को जोर-शोर से उठाया और कई मोको पर सरकार को बैकफुट पर ला दिया। लेकिन विपक्ष के उपनेता हेमंत कटारे के अचानक हुए इस्तीफे ने जरूर चौकाया है, लेकिन इस्तीफे के बाद हेमंत कटारे के बयान के बाद कांग्रेस ने राहत की सांस ली।

वहीं राहुल गांधी और राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के भोपाल दौरे के बाद कांग्रेस ने एकजुटता का संदेश दिया है। और आगामी चुनाव में पूरे जोर-शोर से एकजुट होकर लड़ने का संकल्प किया है।

शेख हसीना का एलान जल्द बांग्लादेश लौटेंगी, सड़कों पर संघर्ष का आह्वान

नई दिल्ली। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने कई महीनों की चुप्पी के बाद ऐसी घोषणा की है, जिससे ढाका के राजनीतिक हलकों में हलचल तेज हो गई है। जुलाई 2024 में हुए तख्तापलट और हिंसक विद्रोह के बाद भारत में शरण लेने वाली हसीना ने अब अपने देश लौटने के संकेत दिए हैं। दिल्ली से अपनी पार्टी आवामी लीग के नेताओं के साथ वीडियो संवाद के माध्यम से बातचीत करते हुए उन्होंने कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों से मानसिक और शारीरिक रूप से संघर्ष के लिए तैयार रहने का आह्वान किया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि अब देश लौटकर मैदान में उतरने का समय आ गया है।

हसीना का यह बयान ऐसे समय में आया है, जब बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने उन पर कई गंभीर मामले दर्ज किए हैं और उनकी पार्टी पर विभिन्न प्रकार की पाबंदियां लगा दी गई हैं। दिल्ली में आयोजित इस बैठक के दौरान उन्होंने अपनी वापसी का संकल्प दोहराते हुए मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार की वैधता पर प्रश्न उठाए। उन्होंने अपनी पार्टी पर लगाए गए प्रतिबंधों को अवैध बताते हुए कहा कि जो सरकार स्वयं गैर-कानूनी तरीके से सत्ता में आई है, उसके आदेशों का कोई संवैधानिक महत्व नहीं है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि आवामी लीग पर से प्रतिबंध नहीं हटाया गया तो पार्टी अपनी रणनीति स्वयं तय करेगी और कड़े कदम उठाएगी।

पूर्व प्रधानमंत्री ने हाल ही में बांग्लादेश में संपन्न हुए चुनावों को भी खारिज करते हुए उन्हें मजाक बताया। उन्होंने दावा किया कि जनता ने बड़े पैमाने पर मतदान का बहिष्कार किया और प्रशासन द्वारा जारी लगभग 60 प्रतिशत मतदान के आंकड़े वास्तविकता से परे हैं। हसीना ने आरोप लगाया कि चुनाव से पहले ही मतपेटियां भर दी गई थीं, ताकि उनकी पार्टी को सत्ता से दूर रखा जा सके। उन्होंने तारिक रहमान के प्रभाव वाली व्यवस्था को भी चुनौती दी और कहा कि आवामी लीग के साथ अन्याय हुआ है।

शेख हसीना के इस कड़े रुख से ढाका की अंतरिम सरकार और विपक्षी दलों में चिंता बढ़ गई है। उनके समर्थक इसे नई ऊर्जा के रूप में देख रहे हैं, जबकि विरोधियों का मानना है कि उनकी वापसी से देश में फिर अस्थिरता की स्थिति बन सकती है। अपने संबोधन के अंत में हसीना ने कार्यकर्ताओं से एकजुट होकर सड़कों पर उतरने और लोकतंत्र की बहाली के लिए संघर्ष करने का आह्वान किया। अब यह देखना होगा कि इस घोषणा के बाद बांग्लादेश की अंतरिम सरकार क्या कूटनीतिक और कानूनी कदम उठाती है।

पारिवारिक पेंशन के लिए 45 वर्ष से संघर्षरत महिला को राहत

प्रयागराज।

पारिवारिक पेंशन के लिए चार दशक से अधिक समय से दफ्तरों के चक्कर लगा रही एक महिला के मामले में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने कड़ा रुख अपनाया है। न्यायालय ने कानपुर नगर निगम के अधिकारियों को फटकार लगाते हुए एक सप्ताह के भीतर प्रकरण का निस्तारण करने का आदेश दिया है। यह निर्देश मंजू राय द्वारा दाखिल याचिका पर सुनवाई करते हुए न्यायमूर्ति विक्रम डी. चौहान की एकल पीठ ने दिया।

याचिका के अनुसार महिला के पिता नगर निगम में कार्यरत थे। वर्ष 1975 में सेवानिवृत्ति के बाद उन्हें नियमित पेंशन मिलती रही, किंतु वर्ष 1980 मे उनके निधन के बाद परिवार को पारिवारिक पेंशन स्वीकृत नहीं की गई। विभाग ने नाम की वर्तनी में अंतर को आधार बनाकर प्रकरण लंबित रखा।

अभिलेखों में कर्मचारी का नाम ÷शिखर नाथ शुक्ल÷ दर्ज है, जबकि कुछ दस्तावेजों में शेखर नाथ शुक्ल लिखा गया। अंग्रेजी वर्तनी में एक अक्षर के अंतर को कारण बताते हुए विभाग ने पारिवारिक पेंशन जारी नहीं की। परिणामस्वरूप महिला को 45 वर्षों तक कार्यालयों के चक्कर लगाने पड़े।

न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत शपथपत्र, उत्तराधिकार प्रमाण पत्र और अन्य दस्तावेजों के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि दोनों नाम एक ही व्यक्ति के हैं। न्यायालय ने टिप्पणी की कि केवल वर्तनी के मामूली अंतर के कारण किसी को वर्षों तक अधिकार से वंचित नहीं रखा जा सकता।

न्यायालय ने एक सप्ताह में प्रकरण का अंतिम निर्णय लेने का निर्देश देते हुए कहा कि आदेश की अवहेलना होने पर अगली सुनवाई पर नगर आयुक्त को व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर जवाब देना होगा।

युवती से सामूहिक दुष्कर्म, आरोपियों ने धमकाकर 10 हजार रुपये भी वसूले

गुवाहाटी।

असम के कछार जिला से एक सनसनीखेज मामला सामने आया है। सिलचर शहर के समीप घूमने आई 28 वर्षीय युवती के साथ सात लोगों द्वारा कथित रूप से सामूहिक दुष्कर्म किए जाने का आरोप है। आरोपियों ने युवती को डराकर उससे धनराशि भी वसूल की। पुलिस ने बताया कि इस मामले में अब तक दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

पुलिस अधिकारियों के अनुसार घटना 19 फरवरी की है। पीड़िता अपने एक पुरुष मित्र के साथ सिलचर कस्बे से कुछ किलोमीटर दूर परिपथ मार्ग पर कार में बैठी थी। इसी दौरान एक बहुउद्देश्यीय वाहन में सवार कुछ लोग वहां पहुंचे और दोनों पर हमला कर दिया। हमलावरों ने पहले उनसे निवास संबंधी जानकारी पूछी और फिर दोनों को पकड़ लिया। आरोप है कि सात व्यक्तियों ने पीड़िता के मित्र के सामने ही उसके साथ बारी-बारी से दुष्कर्म किया।

पीड़िता ने शिकायत में यह भी कहा है कि आरोपियों ने उसे जान से मारने की धमकी देकर उनमें से एक के बैंक खाते में 10 हजार रुपये अंतरित करने के लिए मजबूर किया। घटना के बाद पीड़िता की शिकायत पर अनिवार्य चिकित्सकीय

परीक्षण कराया गया तथा उसका बयान दर्ज किया गया है। सिलचर सदर पुलिस थाना में आरोपियों के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत प्रकरण दर्ज किया गया है, जिनमें सामूहिक दुष्कर्म, डकैती, जान से मारने की धमकी देकर धन उगाही तथा महिला की गरिमा भंग करने संबंधी धाराएं शामिल हैं। पुलिस के अनुसार पीड़िता द्वारा पहचाने गए दो आरोपियों को हिरासत में लिया गया है, जबकि अन्य फरार आरोपियों की तलाश में दबिश दी जा रही है।

इस प्रकरण ने उस समय और तूल पकड़ लिया जब मंगलवार को एक स्थानीय पत्रकार पर आरोपियों के परिजनों द्वारा हमला किए जाने का आरोप सामने आया। पत्रकार ने दावा किया कि उन्हें राष्ट्रीय राजमार्ग मार्ग स्थित पुलिस थाने के पास रोका गया और समाचार संकलन को लेकर मारपीट की गई। घटना के बाद मामला सामाजिक माध्यमों पर व्यापक रूप से प्रसारित हुआ, जिसके बाद पुलिस की कार्यप्रणाली पर भी प्रश्न उठने लगे।

मामले की गंभीरता को देखते हुए जनप्रतिनिधियों ने भी कड़ा रुख अपनाया है। राज्यसभा सांसद सुष्मिता देव ने कछार जिले के पुलिस अधीक्षक से मुलाकात कर अब तक की कार्रवाई की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के जघन्य अपराध में किसी भी प्रकार की ढिलाई स्वीकार नहीं की जाएगी और दोषियों को कड़ी सजा दिलाई जानी चाहिए।

विधानसभा में सरकार पर तीखे सवाल, मास्टर प्लान और मेट्रो पर घमासान

भोपाल। मध्यप्रदेश विधानसभा के बजट सत्र में बुधवार को भोपाल के लंबित मास्टर प्लान और मेट्रो परियोजना को लेकर सत्ता और विपक्ष के बीच तीखी बहस हुई। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने आरोप लगाया कि सरकार के अंदरूनी मतभेदों के कारण मास्टर प्लान अटका हुआ है, जबकि अवैध कॉलोनियों का विस्तार जारी है। उन्होंने कहा कि बड़े शहरों की जनता के साथ अन्याय हो रहा है।

कांग्रेस विधायक जयवर्धन सिंह ने कहा कि भोपाल का मास्टर प्लान वर्षों से लंबित है और अधिकारियों की लापरवाही से 22 करोड़ रुपये का ठेका बढ़कर 72 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। उन्होंने प्रदेशभर में स्वच्छता के लिए इंदौर मॉडल लागू करने और मेट्रो को सार्वजनिक परिवहन से जोड़ने की मांग की।

नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने स्पष्ट किया कि मेट्रो के भूमिगत निर्माण से किसी कब्रिस्तान को नुकसान नहीं होगा और विशेष तकनीक से सुरंग तैयार की जा रही है।

वहीं वन विभाग में श्रमिकों के भुगतान और बाहरी मजदूरों से काम कराए जाने का मुद्दा भी गूंजा। भाजपा विधायक उमाकांत शर्मा ने अनियमितता के आरोप लगाए, जिस पर वन राज्य मंत्री दिलीप अहिरवार ने कहा कि नियमों के अनुसार कार्य किया गया है।

प्रश्नकाल के दौरान न्यायिक अधिकारियों की सुरक्षा और पत्रकार सुरक्षा कानून का मामला भी उठा। सरकार ने कहा कि आवश्यकता के अनुसार सुरक्षा दी जा रही है तथा पत्रकार सुरक्षा कानून के संबंध में प्रक्रिया जारी है।

पीएम मोदी इजरायल दौरे पर रवाना

नई दिल्ली।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बुधवार को दो दिवसीय राजकीय यात्रा पर इजरायल के लिए रवाना हो गए। यह उनके कार्यकाल का दूसरा इजरायल दौरा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार इजरायल के प्रधानमंत्री बेन्जामिन नेतन्याहू और उनकी पत्नी सारा नेतन्याहू स्वयं बेन गुरियन हवाई अड्डे पर प्रधानमंत्री मोदी का स्वागत करेंगे। इसे निर्धारित प्रोटोकॉल से हटकर विशेष सम्मान माना जा रहा है। इससे पहले वर्ष 2017 की ऐतिहासिक यात्रा के दौरान भी नेतन्याहू ने व्यक्तिगत रूप से हवाई अड्डे पर उपस्थित रहकर उनका स्वागत किया था।

सूत्रों के अनुसार पिछले एक दशक में भारत और इजरायल के संबंधों में उल्लेखनीय गहराई आई है। दोनों देशों के बीच रक्षा, प्रौद्योगिकी और सामरिक साझेदारी के क्षेत्र में सहयोग निरंतर बढ़ा है। इस यात्रा में रक्षा सहयोग प्रमुख विषय माना जा रहा है। बताया जा रहा है कि इजरायल ने अपनी प्रसिद्ध 'आयरन डोम' वायु रक्षा प्रणाली की तकनीक भारत के साथ साझा करने और हस्तांतरण करने का प्रस्ताव दिया है। माना जा रहा है कि भारत इसे अपने स्वदेशी 'सुदर्शन चक्र' कार्यक्रम के साथ जोड़ सकता है, जिससे कम दूरी के हवाई खतरों से सुरक्षा और सुदृढ़ होगी।

रक्षा क्षेत्र में दोनों देशों के बीच सहयोग पहले से ही मजबूत रहा है। वर्ष 2026 तक लगभग 8.6 अरब डॉलर के रक्षा सहयोग का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके बाद फ्रांस के पश्चात इजरायल भारत का दूसरा सबसे बड़ा शस्त्र आपूर्तिकर्ता बन सकता है। मानवरहित विमान तकनीक और आधुनिक निगरानी प्रणालियों में इजरायल की विशेषज्ञता से भारत को पूर्व में भी सामरिक बढ़त मिली है।

रक्षा के अतिरिक्त साइबर सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अंतरिक्ष क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर भी दोनों नेताओं के बीच चर्चा होने की संभावना है। यरुशलम में एक संयुक्त नवाचार कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा, जिसमें इजरायल की उच्च प्रौद्योगिकी क्षमता और भारत की व्यापक क्रियान्वयन दक्षता को जोड़ने की योजना है।

आर्थिक मोर्चे पर भी यह यात्रा महत्वपूर्ण मानी जा रही है। वर्ष 2025 में हुए द्विपक्षीय निवेश समझौते के बाद अब मुक्त व्यापार समझौते पर वार्ता को गति देने पर जोर रहेगा। अपने दौरे के दौरान प्रधानमंत्री मोदी इजरायल की संसद 'केनेस्सेट' को संबोधित करने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री होंगे।

पीएम की इजराइल यात्रा पर कांग्रेस का तीखा प्रहार

नई दिल्ली।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दो दिवसीय इजराइल यात्रा को लेकर देश में राजनीतिक माहौल गरमा गया है। बुधवार को प्रमुख विपक्षी दल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इस दौरे पर कड़ा रुख अपनाते हुए केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री पर तीखा हमला बोला। पार्टी का कहना है कि ऐसे समय में जब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की नीतियों और गाजा में सैन्य कार्रवाई की आलोचना हो रही है, प्रधानमंत्री मोदी का उनसे निकटता प्रदर्शित करना भारत की स्थापित विदेश नीति और नैतिक मूल्यों के विपरीत है। कांग्रेस ने इस मुलाकात को नैतिक कमजोरी करार देते हुए आरोप लगाया कि भारत सरकार ने फिलिस्तीनी नागरिकों को उनके हाल पर छोड़ दिया है।

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने भी इस विषय पर प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन्होंने आशा जताई कि प्रधानमंत्री मोदी इजराइली संसद 'केनेस्सेट' को संबोधित करते समय गाजा के गंभीर हालात पर चर्चा करेंगे। प्रियंका गांधी ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि प्रधानमंत्री वहां हजारों निर्दोष पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की मौत का उल्लेख करेंगे और उनके लिए न्याय की मांग उठाएंगे। उन्होंने कहा कि एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत का इतिहास सत्य, शांति और न्याय के पक्ष में खड़े रहने का रहा है और प्रधानमंत्री को इस मंच का उपयोग विश्व समुदाय के सामने वही संदेश रखने के लिए करना चाहिए।

इधर, कांग्रेस महासचिव (संचार प्रभारी) जयराम रमेश ने सामाजिक माध्यमों के जरिए प्रधानमंत्री पर निशाना साधते हुए कहा कि प्रधानमंत्री अपने इजरायली समकक्ष को खुले तौर पर गले लगा रहे हैं, जबकि नेतन्याहू पर गाजा को व्यापक विनाश की स्थिति में पहुंचाने और वेस्ट बैंक में अवैध बस्तियों के विस्तार के आरोप हैं। रमेश ने भारत के इतिहास और फिलिस्तीन के प्रति पुरानी एकजुटता का उल्लेख करते हुए कई ऐतिहासिक संदर्भ भी साझा किए। उन्होंने बताया कि 20 मई 1960 को पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने गाजा का दौरा कर वहां तैनात संयुक्त राष्ट्र की भारतीय टुकड़ी से मुलाकात की थी। साथ ही 29 नवंबर 1981 को फिलिस्तीन के सम्मान में जारी डाक टिकट तथा 18 नवंबर 1988 को भारत द्वारा फिलिस्तीन को स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में दी गई औपचारिक मान्यता का भी उल्लेख किया।

विपक्ष ने मंगलवार को भी सरकार की आलोचना करते हुए कहा था कि गाजा में नागरिकों पर लगातार हो रहे हमलों के बावजूद प्रधानमंत्री का वहां जाना यह संकेत देता है कि भारत ने अपने पुराने रुख से दूरी बना ली है। हालांकि, कूटनीतिक स्तर पर इस यात्रा को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। पिछले नौ वर्षों में यह प्रधानमंत्री मोदी की दूसरी इजराइल यात्रा है, जिसका उद्देश्य रक्षा और व्यापारिक सहयोग को और मजबूत करना बताया जा रहा है। वर्ष 2017 की यात्रा के बाद से दोनों देशों के संबंध रणनीतिक साझेदारी के स्तर तक पहुंच चुके हैं। जहां सरकार इसे भारत के बढ़ते वैश्विक प्रभाव और सुरक्षा हितों के लिए अहम बता रही है, वहीं विपक्ष इसे मानवाधिकारों और भारत की पारंपरिक संतुलित नीति की अनदेखी मान रहा है।

भगोरिया मैले की बढ़ती संख्या, और जनजाति क्षेत्र में पलायन का दंश

माही की गूंज, झाबुआ।

संस्कृति की शुद्धता से सभ्यता की अपनी अनोखी पहचान स्थापित करता जनजाति क्षेत्र का भगोरिया उत्सव जो कि, होली त्यौहार के पहले सात दिन उन स्थानों पर आयोजित किया जाता है जहां पर वहा दिन साप्ताहिक हाट के रुप में विधिवत लगाया जाता है। जनजाति क्षेत्र में होली पर्व से पहले लगने वाले हाट, बाजार को भगोरिया हाट के रुप में मनाकर जनजातिय लोग अपनी संस्कृति के अनुरुप ही अपनी परंपरा का निर्वहन करते हुए अपनी सभ्यता की साख को निरंतर रखते हैं। भगोरिया हाट जो कि प्रेम और उल्लास का उत्सव है जिसमें लोग भगोरिया मेले में मिलते हैं, दुख दर्द बांटकर खुशियों भरे नए जीवन का आरंभ करते हुए अपने कार्यों को भी नई दिशा देते हैं। पारंपरिक और सांस्कृतिक पर्व में जनजाति संस्कृति के गाढ़े रंग में घुलती हुई भगोरिया की सुंदरता में राजनीति के रंग ने भी अपनी प्राथमिकता को प्रदर्शित किया है। हर वह स्थान जहां भगोरिये मेले का आयोजन किया जाता है वहां पर भाजपा, कांग्रेस, जयस, आम आदमी पार्टी, जैसे राजनैतिक दल अपनी-अपनी गैर निकलते हैं जिसमें हजारों की संख्या में ग्रामीणों को सम्मिलीत भी करते हैं। राजनीतिक दल प्रमुख अपनी टोली के सदस्यों के लिए देशी-विदेशी, कच्ची मदिरा का प्रबंध करवाता है फिर गैर में कुर्राटी भरते हुए व्यक्ति अपने मस्ती में मस्त मांदल की थाप पर जमकर नाचता है। इस गैर में नेता, विधायक, सांसद सभी प्रकार के प्रतिनीधि, जिलाध्यक्ष आदि नेता ढोल मांदल को गले में डालकर उसे ताल में बजाते है।

जनजाति क्षेत्र में भगोरिया मैले की संख्या बढ़ती जा रही है मुख्यतः झाबुआ जिले में ही जहां बीते वर्ष 32 स्थानों पर भगोरिया हाट का आयोजन किया गया था वहीं इस वर्ष 35 स्थानों पर भगोरिया मेले का आयोजन किया जा रहा है। पिछले वर्ष के अनुरुप स्थानों में बढ़ोत्तरी होते हुए 3 स्थान और बढ़ गए। मेलो की बढ़ती संख्या में समाज को किस प्रकार का लाभ हो सकता है इसका कोई डाटा नहीं दिखाई देता किंतु इन मेलो की बढ़ती संख्या में देखा जाए तो खालीपन सी भिन्नता वाली अनुभूती होती है। हम थोड़ा बीते वर्षो की ओर मुड़कर देखे, आज से लगभग 10 वर्षों पूर्व जिला क्षेत्र में करीब 20 या 22 स्थान ऐसे हुआ करते थे जहां भगोरिया हाट उत्सव की तरह मनाया जाता था। थोड़ा और वर्षो के पन्ने पलटते है जब मुख्य-मुख्य स्थान जैसे जिला केन्द्र, तहसील केन्द्र, और पंचायत केन्द्र जहां तहसील दूर हो और वहां आसपास के बहुत से गांव या पंचायतें जुड़ रही हो। उस समय के भगोरिया हाट, जब सुबह दस बजे से लोग तैयार होकर पहुंचने लगते थे, और देखते ही देखते विशाल जन समुदाय शहर के मुख्य स्थान पर एकत्र हो जाता था जगह-जगह से ढोल-मांदल की धून पर नाचते गाते युवक और युवतियां अपने सजे हुए परिधान में पर्यटको को आकर्षित करते थे, मैले में आई किशोरियां अपनी टोली के साथ झुला झुलती और पूरे मैले का भ्रमण करती साथ में लोकगीत गाती हुई मदन मुस्कान के साथ क्षेत्र की सुंदरता की छटा बिखेरते हुए भगोरिया देखने आए लोगों का मनमोह लेती थी। प्रतिष्ठीत व्यक्ति अपने दल के साथ दर्जनों ढोल लेकर गाते नाचते गैर निकलता था, जिसमें बच्चें बुढ़े, पुरुष, महिलाएं, सभी शामिल होते थे। बच्चों की भीड़ झुला चकरी के साथ खिलोने की दूकानों पर दिखाई देती थी। मैले के मुख्य स्थान पर लोग घेरा बना कर मांदल पर पारंपरिक भगोरिया नृत्य किया करते थे। पूरे शरीर पर हल्दी लगाए सफेद वस्त्र पहने, हाथ में श्रीफल (नारियल) लेकर मन्नतधारी पूरे मैले का भ्रमण करते थे और उनके साथ कुछ अन्य लोग भी चलते थे। दोपहर की धूप में वह दृश्य मन को शांति प्रदान करने वाला होता था।

हालाकिं वर्तमान परिवेश में भगोरिया हाट में होता वैसा ही है लेकिन बहुत से स्थानों पर भगोरिया हाट लगने से समय का परिवर्तन हो गया। अब मेले वाले स्थान पर दोपहर तक कोई नहीं जाता राजनीतिक दल भी अपनी गैर शाम के समय निकलते हैं। जो भगोरिया मैला आज से 10-15 वर्ष पहले 8 से 9 घंटों का हुआ करता था अब वह मैला कुछ 3 से 4 घंटों में ही सिमट कर रह गया है। सिर्फ झाबुआ जिला जहां 35 स्थानों पर भगोरिया मैले का आयोजन हो रहा है उसमें बहुत से स्थान ऐसे है जहां वो भव्यता देखने को नहीं मिलेगी जो क्षेत्र के केन्द्र पर देखने को मिलती है।

भगोरिया हाट के नाम पर विशेष तौर पर पंचायत से राशि बटोरने के इस खेल में मैलो की बढ़ोत्तरी की जा रही है तो यह जनजाति समाज के लिए किसी भी तरह से लाभप्रद नहीं है। इस छोटे से लालच में समाज अपनी ही प्रतिष्ठा की धीरे-धीरे बलि चढ़ा रहा है। जैसे कि भगोरिया उत्सव के पहले दिन 6 स्थानों पर भगोरिया हाट का आयोजन किया गया जहां दोपहर के बाद 4 बजे राजनीतिक दलों ने गैर निकाली जिसमें संख्या बहुत ही कम थी, तारखेड़ी क्षेत्र में तो सामान्य हाट की तरह भगोरिया हाट रहा। बरवेट और अंधारवाड़ की स्थिति भी ऐसी ही कुछ रही।

एक ओर भगोरिया मैलो की बढ़ती संख्या और उस बढ़ती संख्या में लोगों की घटती संख्या का प्रश्न उस पर जनजाति समुदाय पर पलायन का दंश इस तरह प्रहार कर रहा है कि भगोरिया के चलते भी लोगों को पलायन करना पड़ रहा है। एक दौर था जब भगोरिया के शुरु होने पर बाहर गए कामकाजी लोग अपने गृह क्षेत्र में आ जाते थे और अपने मुख्य पर्व होलिका को पूरे 14 दिन धूमधाम से मनाते थे, परंतु परिवर्तन ने प्रत्येक पखवाड़े को परिवर्तित किया है। जीवन यापन के लिए अब हर किसी को रोजगार की दिशा में दौड़ना पड़ रहा है।

रिकेश बैरागी

बहरहाल भगोरिया मैला की कम होती रौनक का मुख्य कारण एक ही जिले में मैले की संख्या में बढ़ोत्तरी होना ही माना जा सकता है हां संस्कृति में शुद्धता के साथ-साथ आधुनिकता का प्रवेश, परिवेश और परिधानों के उच्च स्तर को दर्शाता है साथ ही मुलतः निश्चित समय को भी दर्शाता है। परिस्थियां इसी तरह रही तो वह दिन भी देखने में आ सकता है जब भगोरिया मैले का समय निर्धारित किया जा सकता है, अगर मैले को मैले के रुप में न देखते हुए उसमें भी लालच के लोभी अपनी संस्कृति के विपरित अपना स्वार्थ साधेगे। इसीलिए वर्तामान पीढ़ी यह भी देखे कि यह उनका पारंपरिक मैला है उनको इस आधुनिकता के साथ इस मैले को किस दिशा में और किस प्रकार से ले जाना है जिससे मैले की भव्यता, सुंदरता, और आकर्षण के साथ प्रसिद्धी में बढ़ोत्तरी होती रहे। इसके लिए ध्यान रखे कि सिर्फ मैले की संख्या बढ़ाने से वह सबकुछ प्राप्त नहीं होगा जो प्रसिद्धी और भव्यता के लिए आवश्यक है।

मातृभाषा रत्न उपाधि से विभूषित

माही की गूंज, झाबुआ।

अंतर्राष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस के अवसर पर नेपाल की प्रसिद्ध संस्था शब्द प्रतिभा बहु क्षेत्रीय सम्मान फाउंडेशन द्वारा झाबुआ जिले के ख्यात साहित्यकार व कवि डॉ. भेरूसिंह चौहान ÷तरंग÷ को उनकी साहित्य साधना,साहित्यिक उपलब्धियों एवं उत्कृष्ट साहित्यकार के रूप में मातृभाषा सेवा के लिए मूल्यांकन कर ÷मातृभाषा रत्न÷ मानद उपाधि सम्मान से विभूषित किया गया।

साहित्य के क्षेत्र में डॉ.भेरूसिंह चौहान ÷तरंग÷ को देश की विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा अनेकों पुरस्कार एवं सम्मान - पत्रों से नवाजा गया है।इन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। इनकी रचनाओं को राष्ट्रीय स्तर की पत्र - पत्रिकाओं एवं काव्य संग्रहों में स्थान मिला है।चौहान ने संस्था के अध्यक्ष आनंद गिरि मायालु एवं चयन समिति प्रमुख मंजू खरे का हृदयतल से आभार व्यक्त किया। इस उपलब्धि पर भेरूसिंह चौहान ÷तरंग÷ को ईष्ट मित्रों,रिश्तेदारों एवं साहित्य प्रेमियों ने अपनी शुभकामनाएं एवं बधाई दी।

एसडीएम ने किया पदभार ग्रहण

माही की गूंज, थांदला।

अनुविभागीय अधिकारी भास्कर गाचले ने बुधवार को थांदला एसडीएम के पद पर पदभार ग्रहण किया। तत्कालीन एसडीएम महेश मंडलोई ने नवागंतुक एसडीएम भास्कर गाचले को प्रभार सौंप कर समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों से परिचय करवाया।

इस अवसर पर समस्त विभागीय अधिकारीयो ने पुष्पगुच्छ भेट कर स्वागत, सम्मान किया पदभार ग्रहण कर श्री गाचले ने अनुविभागीय कार्यालय एवं तहसील कार्यालय का निरीक्षण किया। उन्होंने स्टेनो कक्ष,नाजिर शाखा का निरीक्षण कर दिशा निर्देश दिए। उन्होंने संबंधितों को निर्देश दिए कि राजस्व के कार्य प्राथमिकता से निपटाए तथा नगर व क्षेत्र की प्रमुख समस्याओं की भी जानकारी ली। निरीक्षण के पश्चात स्थानीय तहसील कार्यालय थांदला पर समस्त विभागों के अधिकारियों की बैठक आहुत की। बैठक में तहसीलदार शुकदेव डावर, मुख्य नगर पालिका अधिकारी कमलेश जायसवाल, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद देवेंद्र बरडिया, खंड शिक्षा अधिकारी दीपेश सोलंकी, थाना प्रभारी अशोक कनेश, मंडी सचिव जेएस सोलंकी, सहित अन्य विभागीय अधिकारी, कर्मचारी मौजूद थे।

फायरिंग के बाद दबिश, घर से अवैध हथियार बरामद

माही की गूंज, ग्वालियर।

ग्वालियर के सिरोल थाना क्षेत्र में मामूली विवाद ने हिंसक रूप ले लिया। रास्ते से गाड़ी निकालने को लेकर ब्यूटी पार्लर संचालिका अनु शर्मा और बंटी यादव के बीच कहासुनी हुई, जिसके बाद आरोप है कि बदमाशों ने महिला के घर के बाहर तोड़फोड़ और फायरिंग की। घटना का वीडियो भी सामने आया है। पुलिस ने आरोपियों को पकड़ने के लिए दबिश दी तो घर से अवैध हथियारों का जखीरा बरामद हुआ। मौके से भाई-बहन को गिरफ्तार कर लिया गया, जबकि मुख्य आरोपी सहित तीन लोग फरार हैं। पांच आरोपियों के खिलाफ दो अलग-अलग एफआईआर दर्ज की गई हैं।

पुलिस के मुताबिक मॉडल टाउन निवासी अनु शर्मा लेजर ट्रीटमेंट और बॉडी सॉल्यूशन का काम करती हैं। वह बीती रात अपनी थार कार से घर लौट रही थीं। रास्ते में बंटी यादव के घर के बाहर सड़क पर सीढ़ी रखी थी। अनु द्वारा सीढ़ी हटाने के लिए कहने पर बंटी यादव ने गाली-गलौज की और मारपीट की कोशिश की। इसके बाद अनु कार निकालकर घर पहुंच गईं।

कुछ देर बाद बंटी यादव अपने बेटों अंशुल यादव, दम्मो उर्फ अनिकेत यादव और सूर्या यादव के साथ लाठी-डंडे लेकर अनु शर्मा के घर पहुंचा। उस समय घर पर उनके मेहमान संस्कार शर्मा और विकास यादव मौजूद थे। आरोपियों ने दोनों मेहमानों के साथ मारपीट की और अनु शर्मा व उनकी बेटियों को बाहर खींचने की कोशिश की। इसके बाद बाहर खड़ी थार कार में तोड़फोड़ की गई। दहशत फैलाने के लिए पिस्टल और कट्टे से फायरिंग भी की गई, जिसका वीडियो घर में मौजूद लोगों ने बना लिया और पुलिस को सूचना दी।

सूचना मिलते ही एडिशनल एसपी विदिता डागर के नेतृत्व में पुलिस मौके पर पहुंची, लेकिन आरोपी फरार हो चुके थे। इसके बाद पुलिस ने हुरावली स्थित बंटी यादव के पुश्तैनी मकान पर दबिश दी। वहां मुख्य आरोपी के भाई मनीष यादव और बहन सपना यादव मिले। तलाशी के दौरान भारी मात्रा में अवैध हथियार बरामद हुए।

पुलिस ने 315 बोर की तीन राइफल, 32 बोर की दो पिस्टल, 315 बोर का एक कट्टा, 315 बोर के 52 जिंदा कारतूस, 32 बोर के 17 जिंदा कारतूस, 306 बोर के छह कारतूस, अलग-अलग बोर की 22 गोलियां और 9 मैगजीन जब्त की हैं। अवैध हथियार मिलने के बाद मनीष यादव और सपना यादव को गिरफ्तार कर लिया गया। पूछताछ में दोनों ने बताया कि बंटी यादव और उसके बेटे लोगों को डराने-धमकाने और अवैध वसूली के लिए हथियार रखते थे।

पुलिस ने अनु शर्मा की शिकायत पर बंटी यादव और उसके बेटों अंशुल व अनिकेत के खिलाफ गाली-गलौज, मारपीट, तोड़फोड़ और फायरिंग की धाराओं में मामला दर्ज किया है। वहीं बंटी यादव, उसके दोनों बेटों, भाई मनीष और बहन सपना के खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत अलग से एफआईआर दर्ज की गई है। मुख्य आरोपी बंटी यादव और उसके दोनों बेटे अभी फरार हैं, जिनकी तलाश जारी है। गिरफ्तारी के बाद अवैध हथियारों के नेटवर्क को लेकर विस्तृत पूछताछ की जाएगी।

नगर निगम का बड़ा राजस्व वसूली अभियान, 7 करोड़ से अधिक राशि वसूली

माही की गूंज, इंदौर।

शहर में संपत्ति कर और जलकर के बड़े बकायादारों के विरुद्ध इंदौर नगर निगम ने बुधवार को व्यापक कार्रवाई करते हुए राजस्व वसूली अभियान चलाया। दिनभर चले अभियान में निगम ने 1590 बकायादारों से 7 करोड़ 6 लाख रुपये से अधिक की राशि वसूल की। इस विशेष अभियान के लिए सभी संभागीय कार्यालयों और निगम मुख्यालय पर विशेष शिविर भी आयोजित किए गए थे।

राजस्व विभाग के प्रभारी निरंजन सिंह चौहान और अपर आयुक्त श्रृंगार श्रीवास्तव ने बताया कि शाम 6 बजे तक कुल 7.06 करोड़ रुपये की राशि निगम को प्राप्त हुई। उन्होंने कहा कि बकाया कर जमा नहीं करने वालों के विरुद्ध आगे भी निरंतर सख्त कार्रवाई जारी रहेगी।

निगम की टीमों ने शहर के कई प्रमुख व्यावसायिक प्रतिष्ठानों पर भी कार्रवाई की। संभाग क्रमांक 10 के ओल्ड पलासिया क्षेत्र स्थित अंगारा रेस्टोरेंट पर 2 लाख 75 हजार रुपये का बकाया होने पर उसे सील किया गया। बाद में संबंधित पक्ष ने तत्काल राशि जमा करा दी। इसी प्रकार संभाग क्रमांक 13 के वार्ड 74 स्थित सांघी टोयोटा तथा होटल लॉर्ड्स पर भी बकाया कर के कारण सीलिंग की कार्रवाई की गई।

संभाग क्रमांक 19 के वार्ड 41 स्थित मयूर अस्पताल पर 12 लाख 5 हजार 939 रुपये की बकाया राशि होने पर निगम अधिकारियों ने परिसर को सील कर दिया। इसके अतिरिक्त संभाग क्रमांक 7 के वार्ड 33 स्थित कबीटखेड़ी के एक भवन तथा वार्ड 32, योजना क्रमांक 78 भाग-2 स्थित द हब भवन को भी बकाया कर के कारण सील किया गया।

सीलिंग के साथ ही निगम ने कई स्थानों पर जब्ती और कुर्की की कार्रवाई भी की। संभाग क्रमांक 7 में हाई स्ट्रीट अपोलो और द हब भवन पर संयुक्त रूप से 48 लाख रुपये का कर बकाया था, जिस पर जब्ती-कुर्की की प्रक्रिया अपनाई गई। बाद में संबंधित पक्षों ने बकाया राशि जमा कर दी।

अन्य प्रमुख कार्रवाइयों में संभाग क्रमांक 20 स्थित सोमेश गार्डन पर 10 लाख 92 हजार 646 रुपये के बकाये पर जब्ती-कुर्की की गई। इसी संभाग में वर्जुयस हेल्प केयर लिमिटेड पर 20 लाख रुपये के बकाये के कारण कार्रवाई की गई, जिसके बाद धनादेश के माध्यम से भुगतान किया गया। संभाग क्रमांक 17 के सांवेर मार्ग क्षेत्र में नजमी स्टीम पर 2 लाख 25 हजार तथा मेटल पाइप पर 56 लाख 85 हजार रुपये के बकाये पर जब्ती-कुर्की की कार्रवाई की गई। वहीं योजना क्रमांक 54, संभाग क्रमांक 22 के वार्ड 31 और 36 स्थित तीन भवनों पर 3 लाख 26 हजार 713 रुपये के बकाये के चलते कार्रवाई की गई।

निगम अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि कर वसूली अभियान आगे भी जारी रहेगा और बकायादारों के विरुद्ध नियमानुसार कठोर कदम उठाए जाएंगे।

कार्यालय मुख्यकार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत मेघनगर जिला-झाबुआ (म.प्र.)

क्रमांक/सा.न्याय/2026/2349 मेघनगर, दिनांक 23/02/2026

निविदा आमंत्रण विज्ञप्ति

कलेक्टर महोदय जिला -झाबुआ का आदेश क्रमांक/स.क्र. /1/778098/2026 -झाबुआ दिनांक 01.02.2026 के परिपालन में मुख्यमंत्री कन्या विवाह/निकाह कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 09.03.2026 को किया जाना है। शासन निर्देशानुसार विवाह जोड़ो की संख्या न्यूनतम 11 एवं अधिकतम 200 निर्धारित की गई है। इस आयोजन हेतु विभिन्न सामग्री एवं व्यवस्थाओं यथा 1.लाईट व्यवस्था, 2. भोजन व्यवस्था, 3. हवन वेदी एवं लकड़ी की व्यवस्था तथा पूजन सामग्री एवं पंडित की व्यवस्था, 4. वरमाला एवं पूजा के फूल पुष्प गुच्छ, 5. फोटोग्राफी एवं विडियोंग्राफी, आदि के लिए निविदाए आमंत्रित की जाती है। जानकारी के लिए प्रभारी खंड पंचायत अधिकारी खुमानसिंह भूरिया मोबाइल नंबर 7389748362 तथा सहायक लेखा अधिकारी अधिकारी हरिलाल झाड़ मोबाइल नंबर 8349107874 पर संपर्क कर आवश्यक जानकारी एवं निविदा फार्म प्राप्त कर सकते हैं। एवं अंतिम तिथि दिनांक 05.03.2026 दोपहर 02 बजे तक बंद लिफाफे में निविदा पत्र जमा कर सकते हैं।

- शेष समस्त -शर्तें जनपद पंचायत मेघनगर के सूचना पटल पर देखी जा सकती है।

मुख्यकार्यपालन अधिकारी
जनपद पंचायत मेघनगर

गुहारः फाइनेंस कंपनी की मनमानी से तहसील कार्यालय में कार्यरत चपरासी प्रताड़ित

माही की गूंज, पेटलावद।

बढ़ती लोन ओर फाइनेंस कंपनियों की वसूली से कई लोग प्रताड़ित होकर परेशान हो रहे है। पैसे देने के बाद वसूली के लिए निजी कंपनियों मे कार्य के लिए लगा रखे लोगो की धोखाधड़ी का खामियाजा कंपनी के ग्राहकों को भुगतवा रहे है, ओर मनमाने ढंग से वसूली कर लोगो को लुट रहे है। फाइनेंस कंपनियों की लुट का शिकार आम ग्रामीण ही नहीं नौकरी-पेशा लोग भी हो रहे है

पेटलावद निवासी कन्हैयालाल चारण जो कि, विकास खंड के झकनावदा ठप्पा तहसील में चपरासी के पद कर कार्यरत है। आवश्यकता पढ़ने पर 15 अगस्त 2025 को 53,500 रुपए का लोन श्रीराम फाइनेस कंपनी कानवन रोड पेटलावद में कार्यरत देवेश वैरागी के माध्यम से अपने दुपहिया वाहन पर लिया था। जिसकी किश्त प्रतिमाह 3650 रुपए तय की गई। कन्हैयालाल चारण लोन की किश्त समय पर भर रहा था लेकिन पारिवार में गमी के चलते किश्त समय पर नहीं भर पाया। किश्त नहीं मिलने पर कंपनी के कर्मचारियो ने वाहन जप्त कर लिया है। वाहन जप्त होने के बाद कन्हैयालाल हिसाब करने के लिए कंपनी के ऑफिस कानवन रोड पहुंचे। जहां कंपनी में कार्यरत कर्मचारी भेरूलाल डामर को लोन दिलवाने वाले देवेश वैरागी की उपस्थिति में 23 जुलाई 2025 को 40 हजार रुपए जमा किए। लेकिन कंपनी के ब्रांच मैनेजर सौरभ शर्मा के आने पर पक्की रसीद देने का बोल कर कर्मचारी ने कच्ची रसीद देकर रवाना कर दिया।

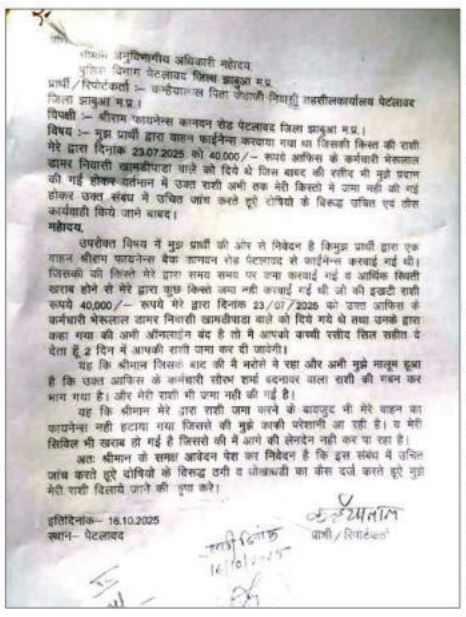

श्रीमान अनुविभागीय अधिकारी महोदय
पुलिस विभाग पेटलावद जिला झाबुआ म.प्र.
प्रार्थी/रिपोर्टकर्ता :– कन्हैयालाल पिता [illegible] निवासी तहसीलकार्यालय पेटलावद जिला झाबुआ म.प्र.।
विपक्षी :– श्रीराम फायनेन्स कानवन रोड पेटलावद जिला झाबुआ म.प्र.।
विषय :– मुझ प्रार्थी द्वारा वाहन फाईनेन्स करवाया गया था जिसकी किस्त की राशी मेरे द्वारा दिनांक 23.07.2025 को 40,000/– रुपये आफिस के कर्मचारी भेरूलाल डामर निवासी खामडीपाडा वाले को दिये थे जिस बाबद की रसीद भी मुझे प्रदान की गई होकर वर्तमान में उक्त राशी अभी तक मेरी किस्तो में जमा नही की गई होकर उक्त संबंध मे उचित जांच करते हुऐ दोषियो के विरूद्ध उचित एवं सख्त कार्यवाही किये जाने बाबद।
महोदय,
उपरोक्त विषय में मुझ प्रार्थी की ओर से निवेदन है किमुझ प्रार्थी द्वारा एक वाहन श्रीराम फायनेन्स बैंक कानवन रोड पेटलावद से फाईनेन्स करवाई गई थी। जिसकी की किस्ते मेरे द्वारा समय समय पर जमा करवाई गई व आर्थिक स्थिती खराब होने से मेरे द्वारा कुछ किस्ते जमा नही करवाई गई थी जो की इकटी राशी रूपये 40,000/– रूपये मेरे द्वारा दिनांक 23/07/2025 को उक्त आफिस के कर्मचारी भेरूलाल डामर निवासी खामडीपाडा वाले को दिये गये थे तथा उनके द्वारा कहा गया की अभी ऑनलाईन बंद है तो मै आपको कच्ची रसीद सिल सहीत दे देता हूँ 2 दिन में आपकी राशी जमा कर दी जावेगी।
यह कि श्रीमान जिसके बाद की मै भरोसे मे रहा और अभी मुझे मालूम हुआ है कि उक्त आफिस के कर्मचारी सौरभ शर्मा बदनावर वाला राशी की गबन कर भाग गया है। और मेरी राशी भी जमा नही की गई है।
यह कि श्रीमान मेरे द्वारा राशी जमा करने के बावजूद भी मेरे वाहन का फायनेन्स नही हटाया गया जिससे की मुझे काफी परेशानी आ रही है। व मेरी सिविल भी खराब हो गई है जिससे की मै आगे की लेनदेन नही कर पा रहा है।
अतः श्रीमान के समक्ष आवेदन पेश कर निवेदन है कि इस संबंध मे उचित जांच करते हुऐ दोषियो के विरूद्ध ठगी व धोखाधडी का केस दर्ज करते हुऐ मुझे मेरी राशी दिलाये जाने की कृपा करे।
इतिदिनांक– 16.10.2025
स्थान– पेटलावद
कन्हैयालाल
प्रार्थी / रिपोर्टकर्ता

ब्रांच मैनेजर सौरभ शर्मा कई लोगों के पैसे लेकर हुआ फरार

राशि जमा होने के बाद भी कंपनी द्वारा राशि जमा नहीं बताई गई। ओर लगातार कन्हैयालाल चारण के मोबाइल पर राशि जमा करने ओर 6 प्रतिशत ब्याज सहित राशि वसूलने के लगातार मेसेज भेजे जा रहे है। कन्हैयालाल कंपनी के ऑफिस में जानकारी लेने गए तो पता चला कि, ब्रांच मैनेजर सौरभ शर्मा कई लोगों के पैसे लेकर फरार हो गया। कंपनी में कार्यरत कर्मचारी से जब कहा गया कि, मैंने तो ऑफिस में पैसे जमा किए है, कर्मचारी गया है तो आपकी जवाबदारी है लेकिन कंपनी वालो ने एक नहीं सुनी और अब तक वाहन से फाइनेंस नहीं हटाया।

पुलिस को की शिकायत नहीं हुआ निराकरण

मामले की शिकायत कन्हैयालाल ने थाना पेटलावद और एसडीओपी पुलिस पेटलावद को लिखित में की। लेकिन मामले का कोई निराकरण नहीं हुआ न ही मामला दर्ज किया गया। शिकायत के बाद पुलिस ने कंपनी के कर्मचारी देवेश वैरागी ओर भेरूलाल डामर से इस बात की पुष्टि भी की कि, कन्हैयालाल द्वारा एक मुश्त चालीस हजार जमा किए गए थे लेकिन ब्रांच मैनेजर सौरभ शर्मा पैसे लेकर भाग गया। जिसकी शिकायत भी कंपनी ने थाने में कर रखी है। जांच के बाद किसी प्रकार का निराकरण नहीं हुआ वही कंपनी वाले वसूली के लिए लगातार दबाव बना रहे है।

सिविल खराब होने से नही मिल रहा लोन, जन सुनवाई में पहुंचा मामला

तहसील कार्यालय जहां आम जनता जन सुनवाई में पहुंच कर न्याय की गुहार लगाती हैं मंगलवार को तहसील में कार्यरत चपरासी कन्हैयालाल ने जन सुनवाई में पहुंच कर आवेदन पेश कर न्याय की गुहार लगाई। आवेदन को गंभीरता से लेते हुए मौजूद अधिकारी ने तुरंत एसडीओपी को कार्रवाई करने के लिए निर्देशित किया।

कन्हैयालाल ने बताया कि, मैं पिछले 6 माह से परेशान हु। कई शिकायतों के बाद कार्रवाई नहीं हुई ओर कंपनी के एजेंट वसूली के लिए दबाव बना रहे है। मुझे दूसरी बैंक से लोन लेना है लेकिन श्री राम फाइनेस कम्पनी का लोन बकाया बताने के कारण मेरी सिविल खराब हो गई, जिससे मुझे दूसरी बैंक लॉन नहीं दे रही है। कंपनी का पैसा ब्याज पर उठा कर जमा किया है उसका ब्याज भी भरना पड़ रहा है। पूरे मामले में पता चला है कि, कंपनी का मैनेजर 15 लाख से ज्यादा की चपत लगा कर गया है ओर कई लोगों की जमा राशि आज भी कंपनी रिकॉड में बाकी चल रही हैं।

खाद्य विभाग की कार्यवाही, 26 नमूने लिए

माही की गूंज, झाबुआ।

होली त्यौहार को दृष्टिगत रखते हुए खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा जिले में पाँच दिनों से खाद्य सुरक्षा अधिकारियों द्वारा दूध एवं दुग्ध उत्पाद, मिठाइयाँ तथा विशेष रूप से कोल्डड्रिंक सहित विभिन्न खाद्य पदार्थों की जांच की जा रही है। 24 फरवरी 2026 को जिले के ग्राम मदरानी, रंभापुर एवं कल्याणपूरा में दो टीमों द्वारा निरीक्षण कर भगोरिया में आमतौर पर विक्रय किए जाने वाले पान मसाला, नमकीन, कोल्डड्रिंक आदि खाद्य पदार्थों के कुल 26 नमूने जांच हेतु लिए गए।

इसके अतिरिक्त तीन दिवसीय भ्रमण कार्यक्रम के अंतर्गत चलित खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला के माध्यम से मौके पर ही 38 नमूनों की प्राथमिक जांच की गई। इनमें से 2 नमूनों को विस्तृत परीक्षण हेतु खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला भोपाल भेजा गया है। अभियान के दौरान ग्रामीणजनों को खाद्य पदार्थों की प्रारंभिक जांच की विधियों के संबंध में जानकारी भी प्रदान की गई।

बाल विवाह रोकथाम हेतु नुक्कड़ नाटक

माही की गूंज, झाबुआ।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना अंतर्गत आयोजित भगोरिया हाट के दौरान जिले के विभिन्न स्थलों पर बाल विवाह रोकथाम विषय पर आधारित नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया जा रहा है।

इन प्रस्तुतियों के माध्यम से आमजन, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों के नागरिकों को बाल विवाह के दुष्परिणामों, कानूनी प्रावधानों तथा बालिकाओं की शिक्षा एवं सशक्तिकरण के महत्व के संबंध में जागरूक किया जा रहा है। कार्यक्रमों का उद्देश्य समाज में सकारात्मक संदेश प्रसारित कर बाल विवाह जैसी कुप्रथा के उन्मूलन हेतु जनभागीदारी सुनिश्चित करना है।

जिला प्रशासन द्वारा आम नागरिकों से अपील की गई है कि, वे बाल विवाह संबंधित प्रशासनिक अधिकारियों को तत्काल सुचना प्रदान करें तथा बालिकाओं की शिक्षा एवं सुरक्षा सुनिश्चित करने में सहयोग दें।

भगोरिया की धूमः परंपरा और रीति रिवाज से मनाएंगे भागोरिया हाट

सीसीटीवी कैमरो से रहेगी निगरानी

माही की गूंज,सारंगी।
संजय उपाध्याय

24 फरवरी मंगलवार से झाबुआ जिले में भगोरिया हाट की शुरुआत हो चुकी है जो 2 मार्च तक चलेगें। आदिवासी बाहुल क्षेत्र के भगोरिया हाट देश-विदेशों में भी प्रसिद्ध है। भगोरिया हाट जिले की लोक संस्कृति, परंपरा और रीति-रिवाज को प्रदर्शित करने का माध्यम है। भगोरिया हाट के बाद होलिका दहन, धुलेटी, पर्व भी जिले में उत्साह पूर्वक मनाया जाएगा। परंपरा के अनुसार भगोरिया हाट की ग्रामीणजनों को वर्ष भर बेसब्री से इंतजार रहता है। ग्रामीण क्षेत्र से आदिवासी महिला-पुरुष, युवा, बच्चे, बुजुर्ग सभी विशेष परिधानों में सज-सवर कर पहुंचते हैं टोलिया बनाकर युवक-युवतियां पान, ठंडाई, सल्पाहार का लुफ्त उठाते हैं।

ग्रामीण जन ढोल-मादल पर जमकर नृत्य करने के साथ गैर निकाली जाती है। दिन भर बाजारो में विशेष रौनक रहती है। इसी व्यवस्था के साथ सारंगी में भी सुरक्षा को लेकर पुलिस अलर्ट है। तथा ड्रोन, सीसीटीवी कैमरे की निगरानी, नियम तोड़ने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। जिला पुलिस अधीक्षक डॉक्टर शिवदयाल सिंह के निर्देशन में एवं पेटलाद टीआई निर्भय सिंह भूरिया के मार्गदर्शन में जारी निर्देशों के अनुसार सारंगी चौकी प्रभारी दीपक देवरे ने प्रतिनिधि को बताया कि, हाट के दौरान सुरक्षा के कड़े इंतजाम रहेंगे और कानून व्यवस्था भंग करने वालों पर तत्काल कार्रवाई की जाएगी। पुलिस के अनुसार आयोजित होने वाले भगोरिया हाट में ड्रोन और सीसीटीवी कैमरो से निगरानी रखी जाएगी। किसी भी प्रकार की असामाजिक गतिविधि सामने आने पर संबंधित व्यक्तियों के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। महिलाओं और बच्चों के साथ अभद्रता या छेड़छाड़ करने वालो पर भी कठोर कार्रवाई की चेतावनी दी गई है। सोशल मीडिया पर भी विशेष निगरानी रखी जाएगी। शराब पीकर वाहन चलाने और ओवरलोड वाहनों के खिलाफ विशेष अभियान चलाया जाएगा। भगोरिया हाट के दौरान तेज ध्वनी में डीजे बजाना पूर्णतः बंद रहेगा।

सीसीटीवी की नजरों में रहेगा पूरा भगोरिया हाट।

थाना प्रभारी निर्भयसिंह भूरिया ने व्यवस्थाओं का लिया जायजा।

प्रतिभा योजना हेतु ऑनलाइन आवेदन

माही की गूंज, झाबुआ।

जनजातीय कार्य विभाग मध्यप्रदेश द्वारा संचालित अनुसूचित जनजाति प्रतिभा योजना के अंतर्गत राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे जेईई, नीट, एम्स, क्लेट एवं एनडीए में सफलता प्राप्त कर प्रतिष्ठित राष्ट्रीय संस्थानों में प्रवेश लेने वाले प्रदेश के अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों को प्रोत्साहन राशि प्रदान किए जाने का प्रावधान है।

आयुक्त, जनजातीय कार्य विभाग द्वारा शैक्षणिक वर्ष 2023-24 से 2025-26 तक के पात्र विद्यार्थियों के लिए योजनान्तर्गत ऑनलाइन आवेदन हेतु पोर्टल 20 फरवरी से 20 मार्च तक पुनः प्रारंभ किया गया है।

योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए निर्धारित समय-सीमा में ऑनलाइन आवेदन करें। ऑफलाइन आवेदन स्वीकार नहीं किए जाएंगे।

अशोक मेहता बने श्रीसंघ के अध्यक्ष

माही की गूंज ,पेटलावद।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ पेटलावद की बैठक 22 फरवरी को स्वाध्याय भवन में आयोजित की गई। जिसमें आगामी कार्यकाल के लिए नवीन कार्यकारिणी का सर्वानुमति से गठन किया गया। इस महत्वपूर्ण बैठक में समाजजनों ने सर्वसम्मति से अशोक मेहता को अध्यक्ष, पारसमल सोलंकी को सचिव, कांतिलाल झाड़मता को उपाध्यक्ष और संजय भंडारी को कोषाध्यक्ष पद की जिम्मेदारी सौंपी। इस दौरान निर्वतमान अध्यक्ष मणिलाल चाणोदीया द्वारा दिए गए सफल कार्यकाल के लिए राजेंद्र कटकानी ने श्री संघ की ओर से उनके प्रति आभार व्यक्त किया।

बैठक की शुरुआत में कोषाध्यक्ष विमल मोदी ने 22 फरवरी तक का आय-व्यय का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया, जिसे पूर्व अध्यक्ष अनोखीलाल मेहता ने सदन के सम्मुख पढ़कर सुनाया और उपस्थित सदस्यों ने इसे सर्वसम्मति से पारित किया।

दर्शनाथ जाएगा श्री संघ

संघ ने आगामी चातुर्मास की तैयारियों पर चर्चा करते हुए पंडित रत्न पूज्य पंकज मुनि जी महाराज साहब, साध्वी श्री रुचिता जी महाराज साहब और आशा जी महाराज साहब से चातुर्मास की स्वीकृति प्राप्त करने हेतु दर्शनार्थ जाने का सामूहिक निर्णय भी लिया।

नवनियुक्त पदाधिकारियों को पूर्व अध्यक्ष नरेंद्र कटकानी और नरेंद्र मोदी ने हार पहनाकर एवं शाल ओढ़ाकर सम्मान के साथ पदभार ग्रहण करवाया। इस साधारण बैठक में समाज के कई प्रबुद्धजनों ने अपने विचार साझा किए। जिनमें नरेंद्र कटकानी, नीरज जैन, कांतिलाल झाड़मता, मणिलाल मेहता, संतोष गुजराती, दीपक सोलंकी, अशोक भंडारी, चेतन कटकानी, संजय भंडारी और विपुल मेहता शामिल रहे।

रेलवे फाटक के समीप हुई लूट के बाद आक्रोश में व्यापारी

पुलिस सुरक्षा व्यवस्था पर उठाए सवाल, जरूरी और व्यस्ततम पाइंट पर नहीं दिखाई देती पुलिस

घटना के बाद आक्रोशित व्यापारियों ने चौकी पर पहुंच कर सोपा ज्ञापन।

घायल व्यापारी कालू अग्रवाल।

माही की गूंज, बामनिया।

शनिवार रात बामनिया रेलवे फाटक के पास हुई लूट के बाद ग्राम के व्यापारियों में भय का माहौल हैं। इस घटना को लेकर स्थानीय व्यापारियों में आक्रोश देखने को मिला और व्यापारी संघ ने इसका विरोध दर्ज करवाते हुए ज्ञापन सौंप कर अपराधियों को पकड़ने ओर कार्रवाई की मांग की।

ग्राम के नारेला-सेमलिया मार्ग पर अनाज खरीदी का व्यापार करने वाले पल्ली व्यापारी कालू अग्रवाल रात करीब 9 बजे दुकान बंद कर घर लौट रहे थे। तभी रेल्वे फाटक के पास घात लगाए बैठे तीन-चार बदमाशों ने उन्हें रोककर बेरहमी से मारपीट की और नगदी से भरा बैग छीन ....कर अंधेरे में गायब हो गए।

हमले की गंभीरता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि, उनके दांत टूटे, सिर के पीछे गहरी चोट आई, हाथ और जबड़े पर वार के निशान हैं। उन्हें तत्काल पेटलावद के निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उपचार के बाद दाहोद रेफर किया। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है और सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं।

घटना के विरोध में बामनिया सकल व्यापारी संघ सड़कों पर उतर आया। चौकी प्रभारी को एसपी के नाम ज्ञापन सौंपते हुए व्यापारियों ने साफ कहा, यह सिर्फ एक लूट नहीं, लगातार छोटी-बड़ी बढ़ती वारदातों का नतीजा है। व्यापारियों का आरोप है कि, 2025-26 में हुई चोरी और लूट की घटनाओं में सीसीटीवी फुटेज देने के बावजूद अपराधियों तक पुलिस नहीं पहुंच सकी। इससे अपराधियों एवं असामाजिक तत्वों के हौसले बुलंद हैं। शराबियों, हुड़दंगियों और बाईक पर दहशत फैलाने वालों में पुलिस का खौफ खत्म होता नजर आ रहा है। व्यापारी संघ ने चेतावनी दी है कि, संदिग्ध इलाकों पर सख्ती नहीं बढ़ी और अपराधियों की गिरफ्तारी जल्द नहीं हुई, तो आंदोलन और उग्र होगा।

क्या रेलवे फाटक और बाहरी व्यापारिक क्षेत्र अपराधियों के लिए आसान निशाना बन चुके हैं...?

घायल व्यापारी कालू अग्रवाल का कहना है, मैं रोज की तरह दुकान बंद कर घर लौट रहा था। रेलवे फाटक के पास तीन-चार लोगों ने अचानक रोक लिया और मारपीट कर नगदी से भरा बैग छीन लिया। मैं, प्रशासन से मांग करता हूं कि आरोपियों को जल्द पकड़ा जाए, ताकि आगे किसी और व्यापारी के साथ ऐसी घटना न हो।

बामनिया की सरपंच रामकन्या संजय मखोड ने कहा कि, ग्राम की सुरक्षा केवल पुलिस की नहीं, हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है, फिर भी लगातार हो रही घटनाएं, चिंता का विषय हैं। उन्होंने प्रशासन से रात्रि गश्त बढ़ाने, संवेदनशील स्थानों पर विशेष निगरानी रखने तथा मुख्य बाजार में दो जवानों और एक महिला कांस्टेबल की स्थायी तैनाती की मांग की। साथ ही आश्वस्त किया कि, पंचायत स्तर पर भी सुरक्षा को लेकर पूरा सहयोग दिया जाएगा, ताकि व्यापारियों और आम नागरिकों का विश्वास बना रहे।

बामनिया चौकी प्रभारी हीरालाल मालीवाड़ का कहना है, घटना की सूचना मिलते ही टीम मौके पर पहुंची। आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं और संदिग्धों की पहचान के प्रयास जारी हैं। आरोपियों को जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।

जरूरी और व्यस्त पॉइंट पर नहीं दिखाई देती पुलिस

ग्राम के मुख्य चौराहे, रेलवे स्टेशन, शराब दुकान, सब्जी मंडी सहित ग्राम के आसपास ऐसे कई पॉइंट है जहां पर आए दिन विवाद की स्थिति बनती हैं, या ऐसे लोग खड़े रहते हैं जो किसी भी मामूली विवाद को बढ़ा तूल देकर ग्राम का माहौल खराब करते है। ग्राम के मुख्य चौराहे पर आए दिन जाम की स्थिति भी बन जाती हैं लेकिन इस दौरान पुलिस की उपस्थिति नहीं होती है, जिससे आमजन को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ज्ञापन के दौरान व्यापारियों ने पुलिस पर आरोप लगाए ओर ग्राम में पुलिस की उपस्थिति नहीं होने को लेकर विरोध भी किया।

संपादकीय

डिजिटल खतरे को भी आतंकवाद माना जाए...!

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और इंटरनेट के दौर में लगातार घातक और ग्लोबल होते आतंकवाद से निपटना देश-दुनिया की बड़ी चुनौती बनता जा रहा है। आधुनिक तकनीक और अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क के चलते दुनिया का कोई कोना आज आतंकवाद से अछूता नहीं है। सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि आतंकवाद से मुकाबला करने वाला हमारा तंत्र तकनीक और संसाधनों के दृष्टिकोण से उन्नत नहीं है, जिसके चलते अपराधी पुलिस व सुरक्षा बलों पर इक्कीस पड़ते हैं। संगठित अपराधी गिरोह हवाला और अन्य स्रोतों से वित्तीय संसाधन जुटाकर सरकारों को चुनौती देने लगे हैं। इस संकट के आलोक में भारत सरकार ने आतंकवाद पर कड़ा प्रहार करने की रणनीति को अंतिम रूप दिया है। भारत सरकार ने अब आतंकवाद के खिलाफ जंग में नई राष्ट्रीय नीति और रणनीति 'प्रहार' को सिरे चढ़ाने की घोषणा की है। 'प्रहार' अर्थात्? 'प्रिवेंशन, रिस्पांस एंड हेलि्थग अप्रोच टू एंटी-टेररिज्म।' गृह मंत्रालय द्वारा तैयार इस आतंकवाद-रोधी नीति और रणनीति में पहली बार डिजिटल खतरों को आतंकवाद की श्रेणी में रखा गया है। हाल ही के दिनों में देश के भोले-भाले नागरिकों को जिस तरह हाउस अरेस्ट करके सरेआम लूटा गया, उससे देश के सभ्य समाज में भय व्याप्त है। लोगों की जीवनभर की जमापूंजी और सेवानिवृत्ति लोगों के पूरे सेवाकाल की बचत पर जिस तरह ऑनलाइन डाका डाला जा रहा है, उसे देखते हुए डिजिटल खतरों को आतंकवाद की श्रेणी में रखना वक्त की जरूरत है। साथ ही यह सुनिश्चित करना भी जरूरी है कि डिजिटल अपराधों से आतंक फैलाने वालों को आतंकवादियों जैसी सजा देने का प्रावधान हो। हाल ही के दिनों में देश में साइबर हमले और आपराधिक हैकिंग के मामले भी खासे बढ़े हैं। यह स्वागतयोग्य है कि नई आतंकवाद विरोधी नीति में दुनिया के काले कारोबार की कुख्यात धारा डार्क वेब, क्रिप्टो मायाजाल आदि उन्नत तकनीकों द्वारा अपराध जगत को सींचने वाले वित्तपोषक तंत्र से निपटना भी नई आतंकवाद विरोधी नीति का लक्ष्य होगा, जो आज देश में आतंकवाद पोषण का जरिया बन रहा है।

निःसंदेह, हाल ही के दिनों में सीमा पार से जारी ड्रोन हमले और साइबर आतंकवाद देश की सुरक्षा के लिए चुनौती बनता जा रहा है। ऐसे में नागरिकों के हितों की रक्षा के लिए आतंकवादी हमलों पर अंकुश लगाना बेहद जरूरी है। यदि खतरे को समय रहते भांपते हुए तत्काल प्रतिक्रिया दी जा सके तो नागरिकों के हित सुरक्षित रह सकते हैं। इसके लिये जरूरी है कि नागरिक सुरक्षा में लगी पुलिस, सुरक्षा बलों तथा अन्य आंतरिक क्षमताओं को एकीकृत किया जाए। साथ ही वैश्विक स्तर पर भारत की संप्रभुता को चुनौती देने वाले संगठनों पर नकेल कसने के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों में समन्वय की जरूरत है। आतंकवाद के खिलाफ जारी इस रणनीति में आतंकी हमलों की रोकथाम के लिए इंटेलिजेंस सूचनाओं की गुणवत्ता बढ़ाने, सुरक्षा बलों को उन्नत हथियार उपलब्ध कराने, नई तकनीक से लैस करने, पुलिस, एनएसजी व केंद्रीय सुरक्षा बलों में समन्वय से तत्काल प्रतिक्रिया देने, सुरक्षा एजेंसियों के आधुनिकीकरण व प्रशिक्षण से आतंक पर प्रहार की क्षमता को बढ़ाने का निर्णय लिया गया है। महत्वपूर्ण बात यह भी है कि पहली बार भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 को भी आतंकवाद रोधी कानूनी ढांचे में शामिल किया गया है। इसके अलावा समाज में कट्टरपंथ को रोकने के लिए किए जाने वाले प्रयासों का जिक्र आतंकवाद विरोधी नीति में शामिल है, जिसमें सामुदायिक नेताओं, धर्मगुरु व स्वयंसेवी संगठनों की मदद भी ली जाएगी। निस्संदेह, समय के साथ बढ़ती आतंकवाद की चुनौती के मुकाबले में नागरिकों की सजगता व सतर्कता एक बड़ी भूमिका हो सकती है। वहीं दूसरी ओर नई आतंकवाद विरोधी नीति में समग्र सामाजिक प्रयासों का भी उल्लेख किया गया है, जिसमें आतंकी हमलों के बाद समुदाय को एकीकृत करने, मनोवैज्ञानिकों, अधिवक्ताओं तथा समाजसेवी संगठनों की मदद से स्थिति सामान्य करने में लोगों की भागीदारी बढ़ाई जाएगी। लेकिन यहां यह भी जरूरी है कि आतंकवाद के खतरों को कम करने के लिए मानवाधिकार और कानून व्यवस्था पर आधारित प्रतिक्रिया दी जाए। निस्संदेह, लगातार मारक होती आतंकवाद की चुनौती के मुकाबले के लिए समग्र नीति के साथ नागरिकों की सजगता व सतर्कता भी बेहद जरूरी है।

खेल भावना के अनुरूप नहीं है यह व्यवहार

प्रदीप मैगजीन

आखिर में, शेक्सपियर के शब्दों में 'यह एक मूर्ख द्वारा सुनाई कहानी जैसा रहा, हो-हल्ले और आवेश से भरी, पर सिर-पैर कोई नहीं'। बैट और बॉल के बीच मुकाबले के रूप में चलाई गई गोलियों की इस लड़ाई में, किसी को अंदाज़ा नहीं कि खेल का अंतिम परिणाम क्या होगा, सिवाय उन लोगों के लालच को संतुष्ट करने के, जिन्हें कैश काउंटिंग मशीन की सरसराहट भरी आवाज़ पसंद है।

दंभ भरे दिमागों के टूटे हुए टुकड़ों को जोड़ने और मैच कराने के लिए खर्च की गई ऊर्जा आखिकार क्या इसी लायक थी? एक समय था जब भारत-पाकिस्तान मैच, भले ही मुकाबला ज्यादातर रोमांचक न भी हो, दोनों तरफ के खिलाड़ियों के ज़बरदस्त खेल कौशल का नमूना हुआ करता था। क्रिकेट के नज़रिए से, यह देखना दुखद है कि एक समय काफी मज़बूत रहा पाकिस्तान अब घबराए हुए, अनाड़ी खिलाड़ियों की टीम सरीखा है, खिंचाई करने वाले अपने से बड़े बच्चों की टोली में फंसे एक सहमे बालक की तरह।

आश्चर्य और रोमांचक संभावनाओं से भरपूर विश्व कप, जो कट्टर परंपरावादियों तक को क्रिकेट के टी-20 प्रारूप के प्रति अपनी नापसंदगी पर फिर से सोचने पर मजबूर कर दे, भारत-पाकिस्तान का मैदान से इतर चला नाटक इस बात की बेतरह याद दिलाता है कि खेल का राजनीति के साथ घालमेल क्यों नहीं करना चाहिए। जिस प्रकार, नए छोटे देशों ने क्रिकेट के इस प्रारूप को अपनाया है और पुरानी टीमों को भी चुनौती दे रहे हैं, उससे टेस्ट क्रिकेट के अवसान को लेकर बना डर और पक्का हो चला है। जब नेपाल इंग्लैंड को लगभग हरा सकता है, यूनाइटेड स्टेट्स की टीम भारत के धमाकेदार बैटिंग को लगभग नाकाम कर डाले और ज़िम्बाब्वे बड़ी जीत हासिल कर सकता है, तो यह साफ़ है कि टी-20 की दुनिया में कोई भी अजेय दिग्गज नहीं है।

टेस्ट मैच प्रारूप खेलने वाले देशों का कुलीन क्लब लंबे समय तक ऐसे देशों की तलाश करता रहा, जिनसे सदस्यों की सीमित संख्या बढ़ सकें, लेकिन कोई फायदा नहीं। इसके विस्तार में नाकामी, अन्य कई कारणों के अलावा, इसके लिए आवश्यक मुश्किल कौशल पास न होना भी हो सकते हैं, जिनमें महारत हासिल करने में समय और एक माकूल क्रिकेट संस्कृति खपती है।

1970 के दशक के बाद से यह माना जाता था कि जहां टेस्ट क्रिकेट नाकाम रहा, वहां 50 ओवर का खेल कामयाब होगा। हालांकि इसने सदस्यता का अंतर कम किया और 'औसत दर्जे की' टीमों को मुकाबला करने का मौका दिया, लेकिन इसमें भी खेल का मुख्य प्रारूप लगभग टेस्ट क्रिकेट जैसा ही रहा, अफगानिस्तान एक दुर्लभ अपवाद है। लेकिन टी-20 ने सचमुच न सिर्फ क्रिकेट खेलने के तरीके में क्रांति ला दी है, बल्कि उन देशों की कल्पना को भी जगाया है जो थकाऊ और ऊर्जा खपाऊ टेस्ट क्रिकेट में रणनीतिक कौशल में पिछड़ने पर हार की शर्मिंदगी से बचना चाहते थे।

हमारे मौजूदा समय के लिए एक उक्ति जो एकदम सही बैठती है, 'जल्दबाज़ी एक खूबी है; सब्र एक बुराई'। क्रीज पर धैर्य और कुशलतापूर्ण एकाग्र नज़र, बैटिंग के दो ऐसे आधार स्तंभ, जिनसे एक पारंपरिक टेस्ट बल्लेबाज सफल होता है। उसे अपने जल्दबाज़ी पर काबू पाने, सही समय का इंतजार करना और राजमिस्त्री की तरह ईंट-दर-ईंट पारी का निर्माण बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है, जिसे दरवाज़े की नॉब ठीक करने की बजाय एक पूरा महल उसारना होता है।

जबकि टी-20 क्रिकेट में बल्लेबाजी एक रेसिंग ट्रैक है, जिस पर चलाने को चालक को गियर-विहीन कार दी जाती है। कोई सड़क कहीं भी ऊबड़-खाबड़ नहीं होती, निबटने को कोई खतरा नहीं । उसके पास रोमांच पैदा करने और जीत हासिल करने का लाइसेंस है। इसके लिए बेहतर छवि होगी मशीन गन या उससे भी घातक हथियार पकड़े हुए एक बंदा जो तूफान की भांति तड़ातड़ गोलियां बरसा रहा है। यह ज्वालामुखी विस्फोट जैसा है, जिसने बहुत सारे 'साहसी युवाओं' को सम्मोहित कर रखा है और 'बोर' हुए बड़ों तक को अपनी लत में फांस लिया है।

पांच दिन चलने वाला खेल सिमटकर सिर्फ़ साढ़े तीन घंटे का खेल रह गया है, इसने क्रिकेट के व्याकरण को उलट दिया है। 360 डिग्री घूमने वाले बैट, गायब होते डिफेंसिव प्रोड्स, स्कूप और रिवर्स स्वीप, रैंप अप, जानबूझकर बैट के किनारे से मारे गए शॉट जो बाउंड्री की ओर बिजली की तरह लपकते हैं। यह एक तबाही बरपाने जैसा है और इस बौछार का मुकाबला करने के लिए बॉलर भी धोखा और चकमा देने के नए-नए तरीके ईजाद कर रहे हैं। फिंगर फ्लिक, नकल बॉल्स, साइड-ऑन रिलीज़, सटल पॉज़ और अनेकानेक किस्म की स्पीड वेरिएशन उन कई तरीकों में हैं, जिनका इस्तेमाल बैट्समैन को बांधकर रखने की उम्मीद में किया जा रहा है। टिके रहने लिए गेंदबाज को जादूगर बनना होता है वरना जल्द ही हार का सामना करना पड़ेगा।

जब क्रिकेट पागलपन वाली रफ्तार से खेला जा रहा हो और दुनिया इसे अपना रही है, तो क्या भारत और पाकिस्तान के लिए मैदान पर अपना कोई अजीब ड्रामा करना ज़रूरी था? मैं सूर्यकुमार यादव का, बतौर एक बैट्समैन और उनके चेहरे की भंगिमाओं की कला का कायल हूं, जो किसी मंजे हुए अभिनेता तक को मात देती हैं, वे अपना चेहरा सिकोड़ते और फैलाते हैं, अपना माथा सपाट करते हैं, कभी-कभी अपनी जीभ भी निकालते हैं और आंखें बाहर निकालकर भावनाओं का प्रदर्शन करते हैं।

गुणों से परिपूर्ण भारतीय कप्तान को यह शोभा नहीं देता कि वह ऐसा व्यवहार दिखाए और अपने विरोधी कप्तान से हाथ मिलाने से मना कर दे। एक स्थापित परंपरा को तजना हैरान-परेशान करने वाला है और खेल शिष्टाचार की पूर्णरूपेण कमी दिखाता है। भारत कुछ महीने पहले खेले गए एशिया कप में तीन मैचों के दौरान की गई अपनी हरकत को दोहराकर क्या साबित करना चाहता है?

जहां एक ओर यादव ने शायद किसी के निर्देशों पर, टॉस के दौरान पाकिस्तान के कप्तान से सीधी नज़र नहीं मिलाईं और हाथ मिलाने की रस्म के लिए टीमें लाइन में नहीं लगीं, वहीं दूसरी ओर भारत के पूर्व कप्तान और खेल के प्रतीक रहे रोहित शर्मा को पाकिस्तान के किंवदंती बने पूर्व खिलाड़ी वसीम अकरम को गले लगाते हुए कैमरों ने कैद कर लिया। यह दो इंसानों का एक-दूसरे को शुभकामना देने का एक मिसाल था।

हमें आपके खिलाफ खेलने में कोई दिक्कत नहीं, हमें भारत और पाकिस्तान के पुराने धुरंधरों के साथ कमेंट्री करने, एक-दूसरे के चुटकुलों पर हंसने और मुस्कुराने, ब्रॉडकास्टर्स की मदद करने और दोनों टीमों द्वारा पैसे कमाने में कोई दिक्कत नहीं होती, लेकिन कृपया, मैदान पर आधिकारिक रूप से हाथ न मिलाएं। दोगलेपन की न तो कोई हद होती है, न ही कोई बाउंडरी।

सत्ता के शिखर पर सड़ती नैतिकता : एपस्टीन फाइल्स और सफेदपोश दरिंदगी

दिलीप कुमार पाठक

आज जब हम सभ्यता के शिखर पर होने का दंभ भरते हैं, तब जेफरी एपस्टीन जैसी फाइलें हमारे सामूहिक विवेक पर एक गहरा घाव दे जाती हैं। एपस्टीन फाइल्स केवल कुछ नामों की सूची नहीं है, बल्कि यह उस सड़ी-गली मानसिकता का कच्चा चिट्ठा है, जो सत्ता, पैसे और रसूख के नशे में अंधे होकर मानवता को शर्मसार करती रही है। यह मामला दिखाता है कि कैसे दुनिया के सबसे शक्तिशाली लोगकृचाहे वे राजनीतिज्ञ हों, व्यवसायी हों या वैज्ञानिककृएक ऐसे घृणित चक्र का हिस्सा थे, जहाँ मासूमियत का व्यापार होता था।

वैश्विक परिदृश्य में देखें तो एपस्टीन का द्वीप लिटिल सेंट जेम्स आधुनिक युग के नरक जैसा था। अमेरिका से लेकर यूरोप तक के बड़े-बड़े नाम इस दलदल में फँसे नजर आते हैं। अमेरिकी अदालती दस्तावेजों और जांच रिपोर्टों के अनुसार, पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन, ब्रिटेन के प्रिंस एंड्रयू, डोनाल्ड ट्रम्प, वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग और अरबपति बिल गेट्स जैसे रसूखदार व्यक्तियों के नाम इस प्रकरण से जुड़ने से पूरी दुनिया सन्न रह गई। यह कड़वा सच केवल सात समंदर पार तक सीमित नहीं है; जांच की आंच ने भारत के गलियारों को भी छुआ है। विदेशी मीडिया और अदालती फाइलों में कुछ रसूखदार भारतीय नामों का उल्लेख होना इस बात का प्रमाण है कि इस वैश्विक पाप के तार हमारे समाज के रसूखदारों से भी जुड़े थे। यह स्वीकार करना पीड़ादायक है कि जिस भारत ने दुनिया को नैतिकता सिखाई, उसके कुछ प्रभावशाली चेहरे भी उस घृणित नेटवर्क का हिस्सा होने के संदेह के घेरे में आए हैं।

भारत के परिदृश्य में यदि हम इस घटनाक्रम को देखें, तो यह हमारे लिए एक गंभीर चेतावनी है। भारत, जो अपनी संस्कृति में यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते का उद्घोष करता है, आज वहां भी पश्चिमी विकृतियों का प्रभाव बढ़ रहा है। एपस्टीन जैसी फाइलें हमें आईना दिखाती हैं कि एलीट क्लास के नाम पर हम किस ओर जा रहे हैं। भारत में भी अक्सर ऐसे मामले सामने आते हैं जहाँ रसूखदार लोग कानून को ठेंगा दिखाकर जघन्य अपराधों से बच निकलते हैं। एपस्टीन फाइल्स हमें सतर्क करती हैं कि यदि हमने अपनी नैतिक जड़ों को नहीं संभाला, तो धन का अहंकार हमारी आने वाली पीढ़ियों को भी लील जाएगा। यह संकट केवल कानूनी नहीं, बल्कि गहरे नैतिक पतन का संकेत है। जब समाज का अभिजात वर्ग अपनी वासनाओं की पूर्ति के लिए मासूम बच्चों का शिकार करने लगे, तो समझ लेना चाहिए कि हमारी प्रगति का ढांचा खोखला हो चुका है। यह घृणित मानसिकता उस सोच से पैदा होती है जहाँ पैसा इंसान को भगवान और दूसरों को मात्र वस्तु बना देता है। विडंबना यह है कि इनमें से कई लोग दुनिया को नैतिकता और विकास का पाठ पढ़ाते थे, जबकि उनका अपना आचरण अंधकारमय था। क्या हम ऐसे समाज का निर्माण कर रहे हैं जहाँ न्याय केवल गरीबों के लिए है और अमीरों के लिए प्राइवेट आइलैंड पर अपराध की खुली छूट? हमें अपनी न्याय व्यवस्था और सामाजिक ढांचे को इतना पारदर्शी बनाना होगा कि कोई भी रसूखदार खुद को कानून से ऊपर न समझे। यदि आज हम इन सफ़ेदपोश अपराधियों के खिलाफ खड़े नहीं हुए, तो आने वाला इतिहास हमें कभी माफ नहीं करेगा। मासूमों की सुरक्षा और समाज की शुचिता बनाए रखना हम सबकी साझा जिम्मेदारी है।

नैतिकता के आधार पर यह घृणित मानसिकता एक मानसिक बीमारी है। यह उस उपभोगवादी संस्कृति का चरम है, जहाँ मनुष्य को वस्तु समझा जाने लगता है। जब कोई व्यक्ति इतना शक्तिशाली हो जाता है कि उसे लगने लगे कि वह कानून से ऊपर है, तब मानवता का पतन निश्चित है। एपस्टीन के द्वीप पर जो हुआ, वह केवल देह का शोषण नहीं था, वह विश्वास, बचपन और आत्मा का सामूहिक कत्ल था। उन मासूम लड़कियों की चीखें उन आलीशान महलों की दीवारों में दफन हो गईं, जिनका निर्माण कथित सभ्य समाज के नायकों ने किया था। हमें यह समझना होगा कि अपराध केवल वह नहीं है जो एपस्टीन ने किया, बल्कि अपराध वह भी है जो उन रसूखदारों ने मौन रहकर किया। चुप्पी भी एक अपराध है, विशेषकर तब जब वह चुप्पी किसी मासूम की गरिमा की कीमत पर खरीदी गई हो। आज दुनिया को इन फाइलों के माध्यम से उन चेहरों को पहचानना होगा जो दिन के उजाले में परोपकारी होने का ढोंग करते हैं और रात के अंधेरे में मानवता को नीलाम करते हैं। समय आ गया है कि न्याय केवल फाइलों में बंद न रहे, बल्कि उन सभी लोगों को बेनकाब किया जाए जिन्होंने सत्ता के गलियारों को शोषण का अड्डा बनाया। अंततः, समाज को यह तय करना होगा कि हमारे नायक कौन होंगे?

उचित दाम और गुणवत्ता सुनिश्चित की जाए

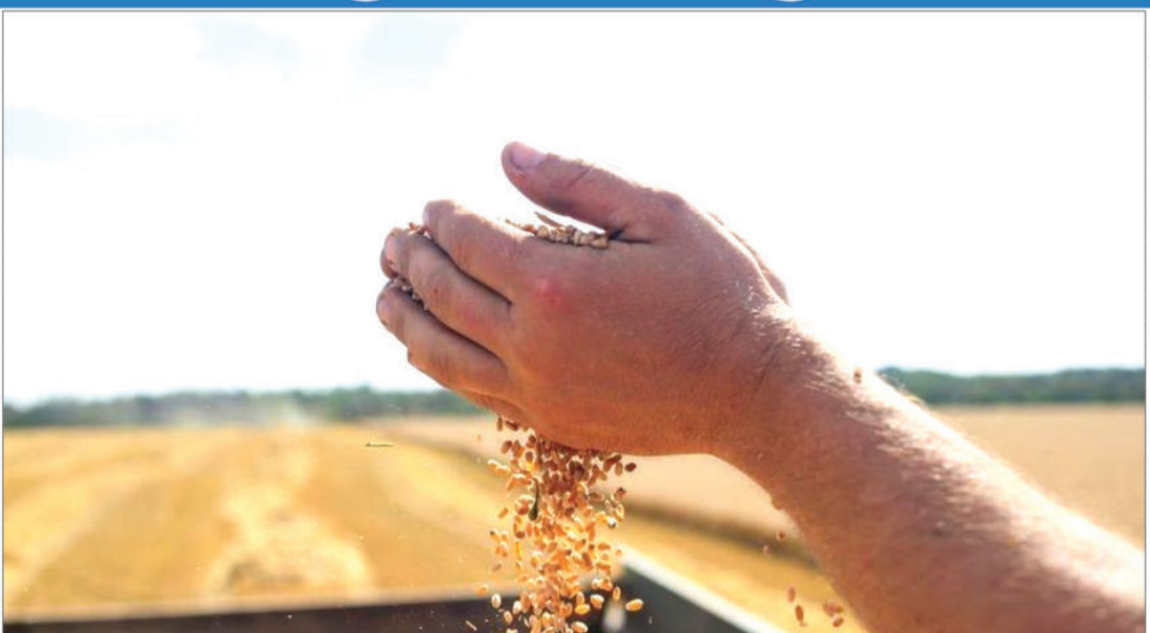

इंद्रजीत सिंह

कृषि मंत्रालय ने बीज संशोधन बिल 2025 का मसौदा जारी किया है, जिस पर 11 दिसंबर तक सार्वजनिक सुझाव मांगे गए थे। हमारे आसपास आज जो बीज हैं, उनकी विशेषताएं लाखों सालों के विकास से समुदायों ने अर्जित की हैं। बीज विज्ञान के प्रारंभ से पहले भी किसान अपनी निगाह से उन्नत किस्म के बीज तैयार करते थे, जिससे पैदावार अधिक होती थी। हालांकि, कृषि विज्ञान के विकास के बाद आधुनिक शोध ने बीज और उत्पादकता में महत्वपूर्ण प्रगति की है, फिर भी कुछ चुनौतियां बनी हुई हैं।

निःसंदेह, बीज के भीतर भी एक बीज होता है उसमें 'जीन कोड' होते हैं जो पौधे के गुणों और उसकी विशेषताओं को अगली पीढ़ी की फसल में ट्रांसफर करने का काम करते हैं। विभिन्न किस्मों के पौधों के मिश्रण से नई शंकर-हाइब्रिड किस्म निकाली जाती है। यह काम वैज्ञानिक लोग आधुनिक यंत्रों और तकनीक से करने लगे हैं जिसे 'जेनेटिक इंजीनियरिंग' कहते हैं। इससे पौधों की ऊंचाई, दाने या फल का आकार व रंग और भीतर के प्रोटीन आदि तत्व भी डाले जा सकते हैं। इस तकनीक से अगर खिलवाड़ की जाए तो उसके बहुत ही ख़तरनाक परिणाम भी निकल सकते हैं।

वर्ष 1960-65 की 'हरित क्रांति' उत्पादन के मामले में भारत ने जो आत्मनिर्भरता हासिल की, उसमें अधिक उपज देने वाली गेहूं, चावल की नई किस्में तैयार करने का अहम योगदान था। उस समय बीज, दवाई, उर्वरक आदि पर निजी कंपनियों का विशेष नियंत्रण नहीं था और ये तमाम प्रबंध सरकारी विभागों और कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा ही किये गए थे। कृषि क्षेत्र में निजी पूंजी के प्रवेश के चलते और कृषि उपकरणों समेत बीज, दवाई आदि के मामले में देशी-विदेशी कंपनियों ने पैठ बना ली। सरकार किसानों के नाम पर जो सब्सिडी देती थी, उसका बड़ा हिस्सा इन्हीं कंपनियों के खाते में जाने लगा है।

हरित क्रांति के उपरांत बीज के क्षेत्र में निजी कंपनियों ने अपना वर्चस्व बनाना शुरू किया। अंधाधुंध मुनाफे के लिए ज्यादा उत्पादन के दावे किए गए। लेकिन कीट व बीमारी के प्रकोप बढ़ गए क्योंकि पुराने बीजों में जो कुदरती तौर पर प्रतिरोधी गुण बीजों ने ग्रहण किए थे उनका क्षरण होने लगा। प्राइवेट कंपनियों ने कीटनाशक दवाइयां बेचने के लिए इसे भी एक अवसर की तरह देखा। यहां बीटी कॉटन का उदाहरण सामने है। गुलाबी सुंडी की प्रतिरोधक क्षमता के दावे करके महंगे बीज बेचे गए और गुलाबी सुंडी से कपास उत्पादक किसानों की व्यापक बर्बादी हुई।

निःसंदेह, बहुस्तरीय और कई साल की ट्रायल के बाद ही बीज की नई किस्मों को स्वीकृति मिलती है। उसके बाद ही बीज को बेचे जाने की अनुमति मिल सकती है। बिक्री करने वाली कंपनी को विधिवत रजिस्ट्रेशन करवाना जरूरी है। लेकिन किसान अपने बचे हुए बीज को बेचने, बदलने, विकसित करने और उसे स्टाक करने के अधिकार भी रखता है। बीज नियमों के संचालन और निगरानी को लेकर बीज अधिनियम-1966 बना था, जिसके तहत ये आवश्यक प्रावधान हैं। क्वालिटी के बीज के दावे किए गए मापदंड, कंपनियां यदि पूरे न करें या उगने का प्रतिशत कम हो तो दंडात्मक कार्रवाई की जा सकती है।

बहरहाल, कुछ दशकों से सार्वजनिक क्षेत्रों, विश्वविद्यालय और बीज विकास संस्थानों को हाशिये पर रखकर नियमों को उदार करके निजी क्षेत्र के प्रवेश को सुगम बना दिया गया। आज 70 प्रतिशत देशी-विदेशी बीज कंपनियां निजी क्षेत्र की बीज मार्केट पर काबिज हो चुकी हैं। 56 प्रतिशत बीज की मार्केट पर मात्र 4 बहुराष्ट्रीय कंपनियों का नियंत्रण है। किसानों को अब इन्हीं कंपनियों के रहमो-करम पर निर्भर रहना पड़ता है। होना तो यह चाहिए था है कि क्वालिटी बीज का शोध, उत्पादन, वितरण सस्ते दामों पर सुलभता से सार्वजनिक व सहकारिता क्षेत्र के माध्यम से ही किसान को सुनिश्चित किया जाता। लेकिन बीज बिल 2025 लाकर केंद्र सरकार बीज के विषय का अति केंद्रीयकरण करना चाहती है। इस मसौदे में एक राष्ट्रीय कमेटी बनाने का प्रावधान है, जिसमें 5-7 राज्यों के ही प्रतिनिधि होंगे और कोई भी मामला नीतिगत है या नहीं, इस पर केंद्र का निर्णय अंतिम होगा।

बिल के प्रस्तावित मसौदे में यदि कोई विदेशी बीज कंपनी अपने देश में ही बीज परीक्षण के ट्रायल करके यदि गुणवत्ता संबंधी स्वयं सत्यापन कर देगी तो वह भी मान्य होगा। ये बहुत घातक प्रावधान है। बीज संबंधी कानूनों का उद्देश्य गुणवत्ता का बीज सस्ते दामों पर किसान को मुहैया करवाने का होता है। इस आशय का आश्वासन ड्राफ्ट में नहीं है। संसद में बताया गया कि 2022 से 2025 के बीच 43001 बीज के नमूने विफल पाए गए। आज जरूरी है कि केंद्र व राज्यों की बीज कमेटियों में कम से कम तीन किसान प्रतिनिधि भी शामिल किये जाएं। बिल मसौदे के चैप्टर 5 के भाग 27 में विदेश के बीजों की वहीं पर दी गई प्रामाणिकता को मंजूरी प्रदान किए जाने के प्रावधान को हटाया जाए। इसमें मूल्य निर्धारण के किसान हितैषी प्रावधान किए जाएं, और जमाखोरी, ब्लैक मार्केटिंग या इजारेदारी पर कड़ी रोक लगाई जाए। स्थानीय स्तर के स्वयं सहायता समूहों और बीज सहकारी समितियों को प्रोत्साहन दिया जाए।

2000 किलो ड्रग केमिकल बरामद एनडीपीएस एक्ट में केस दर्ज

माही की गूंज, मंदसौर।

जिले में पुलिस ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए तकरीबन 2000 किलो सिंथेटिक ड्रग एमडी (मेफेड्रोन) बनाने में उपयोग होने वाला प्रतिबंधित केमिकल बरामद किया है। यशोधर्मन नगर थाना क्षेत्र स्थित विजय हाउसिंग सोसाइटी कॉलोनी के एक मकान से मिली यह भारी मात्रा पुलिस के लिए बड़ी सफलता मानी जा रही है। बरामद केमिकल की कुल मात्रा 1886.6 किलोग्राम बताई गई है, जिससे सैकड़ों किलो एमडी ड्रग तैयार की जा सकती थी.

मकान मालकिन ने किया आवेदन, जांच में सामने आई सच्चाई

25 फरवरी 2026 को ललिता जैन (तरसिंग) निवासी सरकारी बाजार रोड मंदसौर ने थाना वाई डी नगर में आवेदन दिया था। उन्होंने बताया कि उनका मकान 01 जनवरी 2026 से श्रेयांस पिता धरमचंद्र मोगरा निवासी प्रतापगढ़ (राजस्थान) के नाम किराये पर दिया गया था। ललिता जैन ने मकान का कब्जा वापस दिलाने की मांग की। इसी दौरान यह जानकारी सामने आई कि श्रेयांस को कुछ दिन पहले राजस्थान पुलिस ने ड्रग्स मामले में गिरफ्तार किया था।

ताला तोड़ा तो फैली तीखी केमिकल गंध

सीएसपी जितेन्द्र भास्कर के अनुसार आवेदन की जांच हेतु जब थाना टीम मौके पर पहुंची और मकान के बाहर लगे ताले को तोड़ा गया, तो गलियारे में ही तेज रासायनिक गंध महसूस हुई। ड्रमों को एक-एक कर खोला गया, जिसके भीतर तरल अवस्था में संदिग्ध रसायन पाया गया। यह वही केमिकल है, जिसका उपयोग अवैध सिंथेटिक ड्रग एमडी (मेफेड्रोन) बनाने में किया जाता है। पुलिस ने मौके से सभी ड्रम ज़ब्त कर लिए।

एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज

भारी मात्रा में प्रतिबंधित रसायन मिलने के बाद थाना वाई डी नगर पुलिस ने आरोपी श्रेयांस मोगरा के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत प्रकरण पंजीबद्ध किया है. पुलिस अब यह भी जांच कर रही है कि यह रसायन कहां से खरीदा गया? क्या इसे आसपास के राज्यों में सप्लाई किया जाना था? आरोपी के अन्य नेटवर्क और सहयोगी कौन हैं?

पुलिस के लिए बड़ी सफलता, ड्रग नेटवर्क पर सख्ती

मंदसौर पुलिस के अनुसार बरामद केमिकल की मात्रा इतनी ज्यादा है कि इससे स्थानीय और अंतरराज्यीय स्तर पर बड़े ड्रग नेटवर्क का संचालन किया जा सकता था. जांच एजेंसियां अब पूरे नेटवर्क की कड़ियों को जोड़ने और अन्य जगहों पर छापेमारी की तैयारी में हैं।

'ये बच्चा चोर है...' अफवाह उड़ते ही मंदसौर में बुजुर्ग को लोगों ने रस्सी से बांधकर पीटा

माही की गूंज, मंदसौर।

जिले के नरसिंहपुर इलाके में बच्चा चोर होने के शक में एक बुजुर्ग व्यक्ति की भीड़ ने बेरहमी से पिटाई कर दी। लोगों ने उसे रस्सी से बांधकर सड़क पर पटक दिया और लात-घूंसों से मारपीट की। घटना का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया गया। सूचना मिलने पर शहर कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और बुजुर्ग को भीड़ से छुड़ाकर थाने ले गई।

पूछताछ में कोई ठोस तथ्य सामने नहीं आए और किसी ने भी औपचारिक शिकायत दर्ज नहीं कराई। जानकारी में सामने आया है कि संबंधित बुजुर्ग मानसिक रूप से अस्वस्थ है। पुलिस ने लोगों से अफवाहों से बचने और कानून हाथ में न लेने की अपील की है।

पूरा मामला

यह मामला मंदसौर शहर के नरसिंहपुर इलाके का है। यहां एक बुजुर्ग व्यक्ति क्षेत्र में घूमता हुआ दिखाई दिया। इसी दौरान कुछ लोगों ने उसे बच्चा चोर होने के शक में पकड़ लिया। देखते ही देखते मौके पर भीड़ जमा हो गई और बिना किसी ठोस पुष्टि के लोगों ने उसकी पिटाई शुरू कर दी। भीड़ ने बुजुर्ग को रस्सी से बांधकर सड़क पर गिरा दिया और लात-घूंसे बरसाए। पूरे घटनाक्रम का वीडियो भी बनाया गया, जो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है।

घटना की सूचना मिलने पर शहर कोतवाली पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और बुजुर्ग को भीड़ से छुड़ाकर थाने ले गई। पूछताछ के दौरान वह स्पष्ट जानकारी नहीं दे सका। स्थानीय लोगों ने पुलिस को बताया कि वह पहले भी क्षेत्र में घूमते देखा गया है और इसी शक के आधार पर उसकी पिटाई की गई।

पुलिस के अनुसार, किसी भी पक्ष ने मामले में औपचारिक शिकायत दर्ज नहीं कराई है। पूछताछ में भी कोई ठोस तथ्य सामने नहीं आए। शिकायत के अभाव में संबंधित व्यक्ति को छोड़ दिया गया।

प्राथमिक जानकारी में बुजुर्ग को मानसिक रूप से अस्वस्थ बताया गया है। वहीं, मारपीट करने वाले लोगों के खिलाफ भी कोई कार्रवाई नहीं की गई है। पुलिस ने आमजन से अपील की है कि वे अफवाहों से बचें और किसी भी संदिग्ध व्यक्ति या घटना की सूचना तुरंत पुलिस को दें। कानून को अपने हाथ में लेने से बचें और शांति व्यवस्था बनाए रखें।

दूल्हे को घोड़ी से घसीटकर पीटा

माही की गूंज, रतलाम।

जिले में बारात के दौरान दूल्हे व बारातियों से मारपीट का मामला सामने आया है। घटना जिले के मथुरी गांव की है जहां दूल्हे को घोड़ी से घसीटकर पीटा गया और जब मां उसे बचाने आई तो आरोपियों ने मां पर तलवार से हमला कर दिया। बताया गया है कि हमला करने वाले आरोपी कह रहे थे कि शादी में गांव का डीजे बुक क्यों नहीं किया। हालांकि इस घटना के पीछे प्रेम प्रसंग होने की आशंका भी जताई जा रही है। पुलिस ने 7 लोगों पर केस दर्ज कर दो लोगों को हिरासत में लिया है।

घोड़ी से उतारकर दूल्हे को पीटा

मथुरी गांव में बुधवार दोपहर को भेरूपाड़ा से कन्हैयालाल डामर की बारात आई थी। बारात की निकासी हो रही थी और घोड़ी पर दूल्हा कन्हैयालाल सवार था। इसी दौरान कुछ आरोपी जिनके नाम दीपक पारगी, जितेन्द्र, आशीष मोरी और ध्रुव बताए गए हैं वहां पहुंचे। आरोपियों ने गालियां देते हुए दूल्हे को कॉलर पकड़कर घसीटकर घोड़ी से नीचे पटक दिया। आरोपी कह रहे थे कि तुमने गांव का डीजे बुक क्यों नहीं किया। इसी बीच कुछ और युवक वहां पहुंच गए और विवाद बढ़ गया। बेटे को पिटता देख जब दुल्हन की मां उसे बचाने आई तो आरोपी अंकित ने उन पर तलवार से हमला कर दिया। आंख के पास तलवार लगने से दूल्हे की मां को चोट आई है। आरोपियों ने बारात में शामिल और भी लोगों के साथ मारपीट की है। किसी तरह ग्रामीणों ने बीच-बचाव कर मामले को शांत कराया।

थाने पहुंचा दूल्हा, दर्ज कराई शिकायत

घटना के बाद दूल्हा बारातियों के साथ सीधे थाने पहुंचा शिकायत दर्ज कराई। दूल्हे की घायल मां की शिकायत पर पुलिस ने कुल सात आरोपियों आशीष, दीपक, जितेंद्र, ध्रुव, राहुल, संजय और अंकित के खिलाफ मामला दर्ज किया। पुलिस ने अंकित और राहुल नाम के आरोपियों को हिरासत में ले लिया है जबकि बाकी फरार हैं और उनकी तलाश कर रही है। पुलिस को आशंका है कि विवाद केवल डीजे का नहीं है बल्कि दुल्हन के प्रेम प्रसंग से जुड़ा हो सकता है। इधर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराने के बाद दूल्हा वापस गांव पहुंचा और शादी की रस्में पूरी की गईं।

अहमदाबाद से बिहार जा रहे ट्रक में अचानक लगी आग

माही की गूंज, शाजापुर।

जिले में एक बड़ा हादसा टल गया। गुजरात के अहमदाबाद से परचून भरकर बिहार जा रहे एक ट्रक में नगर के समीप से निकले एबी रोड बाईपास पर अचानक आग लग गई। देखते ही देखते ही ट्रक आग ने ट्रक को चपेट में लिया।

ट्रक चालक ने कूदकर बचाई जान

ट्रक के चालक और क्लीनर में कूद कर अपनी जान बचाई। सूचना मिलने पर शाजापुर से दमकल वाहन मौके पर पहुंचे। यहां पर चार से पांच दमकल वाहनों की मदद से आग पर काबू पाया जा सका। आग बुझाने तक एबी रोड पर सारंगपुर की ओर जाने वाले मार्ग को पूरी तरह बंद रखा गया। आग बुझाने के बाद मार्ग को पुन चालू किया गया। तीन से चार दमकल वाहनों की मदद से आग पर काबू पाया गया। आग लगने के बाद शाजापुर से सारंगपुर जाने वाले मार्ग को कुछ देर के लिए बंद कर दिया गया था। जिससे यातायात बाधित हुआ। पुलिस के मुताबिक, आग लगने का कारण अज्ञात है। किसी तरह की जनहानि नहीं हुई है।

मां का अनूठा मंदिर

माही की गूंज, रतलाम।

शहर के करमदी रोड क्षेत्र में मां का ऐसा अनूठा धाम मंदिर बना हैं, जिसकी पूरे देश ही नहीं विदेशों में भी चर्चा हैं। जयपुर के मार्बल से निर्मित यह मंदिर 32 बाय 70 में बनकर तैयार हुआ है, इस मंदिर चमक भक्तों को आकर्षित कर रही हैं। मई में होने वाले प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव की तैयारी शुरू हो चुकी हैं।

शहर के करमदी रोड पर सोनाणा खेतला-सुसवाणी माता का एक साथ देश का पहला मंदिर रहेगा, जहां अनुयायी दोनों आराध्य के एक साथ दर्शन वंदन पूजन कर सकेंगे। जयपुर मंगवाए मार्बल का उपयोग कर करीब एक-सवा करोड़ की लागत से मंदिर का निर्माण हुआ हैं। जिसमें प्रतिमाओं की विधि विधान से प्राण प्रतिष्ठा 1, 2 व 3 मई को देश-विदेश से आने वाले अनुयायियों की उपस्थिति में होगी।

सोनाणा खेतला-सुसवाणी माता का एक साथ पहला मंदिर

सारंगवास सच्चियाय माता के परम भक्त अंकित भटेवरा ने बताया कि मई में प्राण प्रतिष्ठा उत्सव होगा। इसमें दो दिन भजन संध्या का आयोजन होगा। एक दिन गंगाजल वरघोड़ा रहेगा। तीसरे दिन माताजी खेतलाजी और गणेशजी की प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा सोनाणा खेतला के परम भक्त राज राजेंद्र भंडारी करेंगे। 3 मई को होने वाली प्रतिष्ठा के लिए गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान एवं मध्यप्रदेश से आए श्रद्धालुओं ने बोली लगाई।

मकराना मार्बल से तैयार मूर्ति और मंदिर

मकराना मार्बल से निर्मित तीन शिखर मंदिर का निर्माण 32 बाय 70 में किया गया है। एक बड़ा सभा मंडप है। इसमें सुसवाणी माता की प्रतिमा 21 इंच की हैं। सोनाणा खेतला की प्रतिमा सवा 15 इंच की हैं। साथ में रिद्धि-सिद्धि सवा 11 इंच की, खेतलाजी की 21 इंच की मूर्ति हैं। सोनाणा खेतला के तीन स्वरूप के दर्शन होंगे। आगामी दिनों में मंदिर परिसर में धर्मशाला, हॉल की योजना भी हैं।

शहर में अनुयायी 80-90 परिवार

भारत में कहें तो सुनाणा खेतला और सुसवाणी माता के अलग-अलग मंदिर हैं, लेकिन यह पहला मंदिर होगा जब दोनों की एक स्थान पर प्राण प्रतिष्ठा की जा रही हैं। मंदिर का मार्बल और मूर्तियां मार्बल से निर्मित हैं। अनुयायी सुराणा, दुग्गड़, साखला के रतलाम में 80-90 घर हैं। तीन दिवसीय प्रतिष्ठा महोत्सव में 7-8 हजार देश-विदेश से अनुयायी शामिल होने का अनुमान है।

जिले में 1013 और नीमच में 507 गिद्ध मिले

माही की गूंज, उज्जैन।

हाल ही में 20-22 फरवरी के दौरान तीन दिवसीय गिद्धों की गणना में उज्जैन संभाग के मंदसौर -नीमच जिलों से सुखद परिणाम सामने आए हैं। गांधीसागर अभ्यारण्य जहां चीतों का पूर्नआवास बनाया गया है वहां गिद्धों की उत्साहजनक वृद्धि दर्ज की गई है।

दोनों ही जिलों की गणना में मंदसौर जिला के गांधीसागर में 1013 गिद्ध सामने आए हैं तो नीमच में 507 गिद्ध पाए गए हैं। मंदसौर जिला में स्थित गाँधीसागर वन्यप्राणी अभयारण्य एक बार फिर गिद्धों के प्रमुख केंद्र के रूप में उभरा है। 'प्रदेशव्यापी गिद्ध गणना 2025-26' के तहत संपन्न हुई। गणना का निरीक्षण मुख्य वन संरक्षक उज्जैन वृत्त, आलोक पाठक एवं वनमंडलाधिकारी मंदसौर, संजय रायखेरे द्वारा किया गया। गणना के परिणामों में कुल 1013 गिद्ध पाए गए हैं।

विदेशी मेहमान गिद्धों का आगमन भी

गाँधीसागर अभयारण्य केवल स्थानीय गिद्धों का ही नहीं, बल्कि विदेशी प्रजातियों का भी पसंदीदा ठिकाना है। हिमालयन ग्रिफन, यूरेशियन ग्रिफन और सिनेरियस जैसे गिद्ध लंबी दूरी तय कर यहाँ पहुँचते हैं। ये मुख्य रूप से तिब्बत, मध्य एशिया, और हिमालय की ऊँचाइयों से शीतकाल के दौरान प्रवास करते हैं।

ये प्रवासी गिद्ध आमतौर पर अक्टूबर-नवंबर के महीने में गाँधीसागर पहुँचते हैं और गर्मी शुरू होने से पहले यानी मार्च-अप्रैल तक यहाँ रुकते हैं। स्थानीय निवासी चार प्रजातियों के गिद्ध वर्ष भर अभयारण्य में रहते हैं और यहीं प्रजनन करते हैं। इनमें भारतीय गिद्ध चंबल की ऊँची चट्टानों पर घोंसले बनाने वाली मुख्य प्रजाति।

सफेद पीठ वाला गिद्ध पेड़ों पर बसेरा करने वाले ये गिद्ध पारिस्थितिकी तंत्र के लिए महत्वपूर्ण हैं। राज गिद्ध अत्यंत दुर्लभ और विशिष्ट लाल सिर वाली प्रजाति। मिस्त्र का गिद्ध आकार में छोटे और सफेद रंग के स्थानीय गिद्ध।

विदेशी गिद्धों में ये प्रजातियां शामिल

विदेशी मेहमान/प्रवासी (3 प्रजातियाँ) शीतकाल (अक्टूबर-नवंबर से मार्च-अप्रैल) के दौरान तिब्बत, मध्य एशिया और हिमालय की ऊँचाइयों से प्रवास कर यहाँ पहुँचती हैं। हिमालयन ग्रिफन हिमालय के ठंडे क्षेत्रों से आने वाले विशालकाय गिद्ध। यूरेशियन ग्रिफन लंबी दूरी तय कर आने वाले अंतरराष्ट्रीय प्रवासी।

सिनेरियस गिद्ध दुनिया के सबसे भारी और बड़े गिद्धों में शुमार। डीएफओ संजय रायखेरे ने बताया कि गांधीसागर अपनी अनुकुलता के लिए गिद्धों के स्वर्ग के रूप में देखा जाता है। इसके पीछे कारण चंबल नदी के किनारे स्थित ऊँची और दुर्गम चट्टानें गिद्धों को सुरक्षित घोंसले बनाने और प्रजनन के लिए आदर्श स्थान प्रदान करती हैं। अभयारण्य में वन्यजीवों की अच्छी संख्या और आस-पास के क्षेत्रों में पशुधन की उपलब्धता के कारण इन्हें पर्याप्त भोजन मिलता है। चंबल का पानी इनके लिए बारहमासी जल स्रोत है।अभयारण्य का शांत वातावरण और सुरक्षित कॉरिडोर इनके फलने-फूलने में मदद करता है।

सीसीएफ आलोक पाठक ने बताया कि 'गाँधीसागर में 115 सक्रिय घोंसलों का मिलना इस बात का प्रमाण है कि यहाँ का ईकोसिस्टम बेहद मजबूत है। हम इन 'प्रकृति के सफाईकर्मियों' के संरक्षण के लिए लगातार काम कर रहे हैं। इस गणना कार्य में अधीक्षक अमित राठौर सहित वन विभाग के अमले और पक्षी प्रेमियों का विशेष योगदान रहा।

नीमच में तीन प्रजातियों के 507 गिद्ध

नीमच में पहली बार गणना ऐप के माध्यम से दर्ज की गई। उपवन मंडल अधिकारी दशरथ अखंड ने बताया, कि मृत पशुओं का मांस खाने वाले प्राकृतिक सफाईकर्मी गिद्धों की संख्या पशुपालकों द्वारा दर्द निवारक दवा डिक्लोफेनेक के उपयोग के कारण विलुप्ति की कगार पर आ गई थी। वन विभाग के लगातार संरक्षण प्रयासों से प्रति वर्ष इनकी संख्या में वृद्धि दर्ज की गई है। नीमच, मनासा, रामपुरा, जावद और रतनगढ़ वन रेंज तथा जिले की राजस्व भाग में की गई इस गणना में 507 गिद्ध पाए गए।

इसमें मध्य प्रदेश में पाए जाने वाली कुल 7 प्रजातियों में से 3 प्रजाति सफेद इजिप्टियन गिद्ध, सफेद पीठ वाले व्हाइट रैम्पड वल्चर, और इंडियन लॉन्ग बिल्ड वल्चर प्रजातियों को जमीन व पेड़ पर या घोंसलों में बैठे वयस्क, अवयस्क गिद्धों की प्रजातिवार संख्या, उनके आवास, पेड़ो और विश्राम करते हुए, घोंसलों में शिशुओं के साथ, भोजन करते हुए, नदी नाले के पास पानी में देखे गए गिद्धों की गणना ऐप में दर्ज की गई।

गणना के दौरान सख्ती से इस बात का पालन किया गया कि केवल पेड़ों/चट्टानों पर बैठे गिद्धों को गिना जाए. उड़ते हुए गिद्धों को गिनती में शामिल नहीं किया जाता। सूर्योदय से 9 बजे तक चले इस गणना कार्य में वन अमले के साथ नीमच के विशेषज्ञ एवं ने सक्रिय सहभागिता की।

नए सीएमओ ने कार्यालय की सभी शाखाओं का किया आकस्मिक निरीक्षण

माही की गूंज, मंदसौर।

जिले में नगर पालिका के नये मुख्य नगर पालिका अधिकारी प्रेम कुमार सुमन ने नगर पालिका कार्यालय भवन में संचालित होने वाली विभिन्न शाखाओं का आकस्मिक निरीक्षण किया और कर्मचारियों को आवश्यक निर्देश दिए।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी सुमन ने नगर पालिका के प्रभारी कार्यालय अधीक्षक अजय मारोठिया के साथ नगरपालिका की सभी शाखाओं का आकस्मिक निरीक्षण करते हुए कर्मचारियों को कहा कि आपके यहां कोई फाइल पेंडिंग नहीं रहे सभी कार्य समय सीमा में हो आम जनता जो आपके पास आती है उनके साथ आपका व्यवहार अच्छा रहे लोगों को अनावश्यक रूप से अपने काम के लिए चक्कर नहीं लगाना पड़े ऐसा प्रयास करें। नपाध्यक्ष एवं नगर पालिका परिषद की जो भावना है उसके अनुरूप काम हो, निरीक्षण के अवसर पर भोजन अवकाश के निर्धारित समय के बाद अनुपस्थित मिले दो कर्मचारियों को कारण बताओ सूचना पत्र नोटिस देने के भी निर्देश सीएमओं के द्वारा दिए गए।

मिड-डे मील की थालियां कुत्तों ने चाटी, कार्रवाई अब तक लंबित

माही की गूंज, बड़वानी।

जनपद पंचायत राजपुर के प्राथमिक विद्यालय रूई में मध्यान्ह भोजन की थालियों को कुत्तों द्वारा चाटे जाने का मामला सामने आया है। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद भी शिक्षा विभाग की ओर से अब तक ठोस कार्रवाई नहीं की गई है।

मामले में विकासखंड शिक्षा अधिकारी प्रफुल्ल पुरोहित ने बताया कि 3 जनवरी को ब्लॉक संसाधन समन्वयक नवीन गुप्ता के साथ जांच की गई थी। जांच के दौरान ग्रामीणों, विद्यार्थियों और संबंधित शिक्षकों के बयान दर्ज किए गए। जांच में स्वच्छता में गंभीर लापरवाही और भोजन वितरण में चूक पाई गई।

जांच रिपोर्ट के अनुसार, 26 जनवरी गणतंत्र दिवस पर स्वयं सहायता समूह द्वारा पका हुआ भोजन वितरित नहीं किया गया। शिक्षकों के निर्देश पर विद्यार्थियों ने ही भोजन बांटा और थालियों की आंशिक सफाई भी बच्चों से करवाई गई। 27 जनवरी को विद्यालय में मध्यान्ह भोजन नहीं बना और थालियां बिना साफ किए पड़ी रहीं। 28 जनवरी को स्वयं सहायता समूह ने गंदे बर्तन विद्यालय परिसर के बाहर रख दिए, जहां कुत्तों को थालियां चाटते हुए देखा गया। किसी व्यक्ति ने इसका वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर साझा कर दिया।

विकासखंड शिक्षा अधिकारी के अनुसार, प्रधानाध्यापक मदनलाल झालदे ने जांच के दौरान स्वीकार किया कि लगातार दो दिनों तक थालियां साफ नहीं की गईं और परिसर में कुत्ते घूमते रहे। जांच में यह भी स्पष्ट हुआ कि प्रधानाध्यापक के साथ सहायक शिक्षक भारत फन्नौजे और थान गरगावे ने स्वच्छता एवं पर्यवेक्षण की जिम्मेदारी का समुचित निर्वहन नहीं किया।

घटना के बाद 28 जनवरी को सभी थालियों को दोबारा धुलवाया गया तथा 30 जनवरी को संबंधित शिक्षकों को कारण बताओ सूचना पत्र जारी किया गया। मुख्यमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजना के अंतर्गत भोजन बनाने वाले स्वयं सहायता समूह को भी हटा दिया गया है।

विकासखंड शिक्षा अधिकारी ने बताया कि 31 जनवरी को प्रधानाध्यापक एवं दो शिक्षकों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई का प्रस्ताव सहायक आयुक्त, जनजातीय कार्य विभाग तथा जिला शिक्षा केंद्र बड़वानी को भेजा गया था। 12 फरवरी को शिक्षक सहायक आयुक्त के समक्ष प्रस्तुत भी हुए, किंतु एक माह बीत जाने के बाद भी कार्रवाई लंबित है।

सूत्रों के अनुसार, घटना की जानकारी जिला कलेक्टर को भी दी गई थी और उन्होंने सख्त कदम उठाने के निर्देश दिए थे। इसके बावजूद अब तक कोई ठोस कार्रवाई न होना प्रशासन की कार्यप्रणाली पर प्रश्नचिह्न खड़ा करता है।

उल्लेखनीय है कि राजपुर क्षेत्र में हाल ही में रेबीज संक्रमण से छह लोगों की मृत्यु हो चुकी है। ऐसे संवेदनशील समय में इस प्रकार की लापरवाही को गंभीर माना जा रहा है।

शादी का झांसा देकर दुष्कर्म, आरोपी गिरफ्तार

माही की गूंज, खंडवा।

जिले के मूंदी थाना क्षेत्र में शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। पति से अलग रह रही एक महिला ने अपने लिव-इन पार्टनर पर दुष्कर्म का आरोप लगाया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपी को 24 घंटे के भीतर गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

पीड़िता ने पुलिस को बताया कि उसकी शादी करीब आठ वर्ष पहले मूंदी क्षेत्र के एक गांव में हुई थी। शादी के बाद वह लगभग एक वर्ष तक पति के साथ रही, लेकिन आपसी मनमुटाव के कारण दोनों अलग हो गए। महिला की एक संतान भी है। पति से अलग होने के बाद वह अपने बच्चे के साथ मायके में रहने लगी।

करीब दो वर्ष बाद पति का एक रिश्तेदार उसके संपर्क में आया। आरोपी पहले से शादीशुदा है और दो बच्चों का पिता बताया जा रहा है। पारिवारिक पहचान होने के कारण महिला उसे पहले से जानती थी। आरोपी ने दोस्ती बढ़ाई और शादी का वादा किया। इसी भरोसे पर उसने महिला के साथ शारीरिक संबंध बनाए।

महिला का आरोप है कि आरोपी ने मूंदी में किराए का मकान लेकर कुछ समय तक उसके साथ रहकर संबंध बनाए और करीब छह वर्ष तक उसका शारीरिक शोषण किया। जब महिला ने शादी की बात की तो आरोपी मुकर गया।

पीड़िता की शिकायत पर मूंदी थाना पुलिस ने दुष्कर्म का प्रकरण दर्ज किया। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेजने के आदेश दिए गए। मामले की जांच जारी है।

श्रद्धालु का बैग चुराने वाले पति-पत्नी गिरफ्तार

माही की गूंज, खंडवा।

ओंकारेश्वर की ब्रह्मपुरी पार्किंग में एक श्रद्धालु के बैग से लाखों रुपए के आभूषण, मोबाइल और नकदी चोरी करने वाले पति-पत्नी को मांधाता पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से चोरी गया पूरा माल बरामद कर लिया है। दोनों को न्यायालय में पेश करने के बाद जिला जेल भेज दिया गया।

पुलिस के अनुसार राजस्थान के सीकर जिले के जीवन नगर थाना क्षेत्र के ग्राम दुजोद निवासी 34 वर्षीय अविनाश ने 22 फरवरी को थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया कि 20 फरवरी को दोपहर करीब 3 बजे वे परिवार के साथ ब्रह्मपुरी पार्किंग में ओंकारेश्वर दर्शन के लिए आए थे। इसी दौरान गोवर्धन होटल के पास रखा उनकी पत्नी साक्षी का लाल रंग का हैंडपर्स कोई अज्ञात व्यक्ति चुरा ले गया। पर्स में सोने की चार अंगूठियां, मंगलसूत्र, सोने की चेन, चांदी की पायल, एप्पल और मोटोरोला कंपनी के मोबाइल फोन तथा नकदी रखी हुई थी।

शिकायत मिलने के बाद मांधाता थाना पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की। पुलिस अधीक्षक मनोज राय, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राजेश रघुवंशी और अनुविभागीय अधिकारी पुलिस मनोहर गवली के निर्देशन में थाना प्रभारी अनोख सिंह सिंधिया के नेतृत्व में टीम गठित की गई। टीम ने घटनास्थल और आसपास के करीब 100 से अधिक स्थानों के सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले। संदिग्ध गतिविधियां दिखाई देने पर साइबर सेल की सहायता से आरोपियों की पहचान सुनिश्चित की गई।

पहचान होने के बाद पुलिस ने खरगोन जिले के बड़वाह थाना क्षेत्र स्थित ग्राम सिरलाय से 40 वर्षीय गोवर्धन पिता भवरलाल चौहान और उसकी 37 वर्षीय पत्नी उमाबाई को गिरफ्तार कर लिया। उनके कब्जे से 14 हजार रुपए नकद, चार सोने की अंगूठियां, एक सोने की चेन, एक मंगलसूत्र और चांदी की पायल बरामद की गई है।

पुलिस के मुताबिक मुख्य आरोपी गोवर्धन के खिलाफ पहले भी धोखाधड़ी और अन्य धाराओं में आपराधिक मामले दर्ज हैं। आरोपियों को पकड़ने और चोरी का माल बरामद करने में थाना प्रभारी अनोख सिंह सिंधिया, सहायक उपनिरीक्षक सतीश सोहनी, प्रधान आरक्षक भगवान धनगर, आरक्षक रवि, जितेंद्र, पवन महाजन, रोहित रघुवंशी और अनिल बारिया की विशेष भूमिका रही।

बंद मिला अस्पताल, महिला को गेट पर कराना पड़ा प्रसव

माही की गूंज, खरगोन।

जिले के झिरन्या विकासखंड अंतर्गत गभापुरी स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में लापरवाही का मामला सामने आया है। बुधवार सुबह प्रसव पीड़ा से तड़प रही एक गर्भवती महिला को जब परिजन अस्पताल लेकर पहुंचे तो स्वास्थ्य केंद्र बंद मिला। मजबूरी में महिला का प्रसव अस्पताल के मुख्य द्वार पर ही कराना पड़ा।

जानकारी के अनुसार सुबह के समय जब परिजन महिला को लेकर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे, तब वहां कोई डॉक्टर, नर्स या अन्य स्वास्थ्यकर्मी मौजूद नहीं था। परिजन खींदर भूरिया ने बताया कि स्टाफ की अनुपस्थिति के कारण महिला को तत्काल उपचार नहीं मिल सका। इसी दौरान उसे तेज प्रसव पीड़ा शुरू हो गई और हालात ऐसे बने कि अस्पताल के बाहर ही प्रसव कराना पड़ा।

कुछ समय बाद स्थानीय लोगों की मदद से महिला और नवजात शिशु को संभाला गया। घटना की जानकारी प्रशासन तक पहुंचने पर स्वास्थ्य विभाग में हड़कंप मच गया। अधिकारी अब मामले में सफाई देते नजर आ रहे हैं।

घटना से आक्रोशित परिजनों ने स्वास्थ्य विभाग पर गंभीर लापरवाही का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि यदि समय पर चिकित्सकीय स्टाफ मौजूद रहता तो महिला को सुरक्षित रूप से अस्पताल के अंदर भर्ती कर प्रसव कराया जा सकता था। परिजनों ने मामले की जांच कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

अवैध शराब जब्त, एक आरोपी गिरफ्तार

माही की गूंज, खरगोन।

अवैध शराब तस्करी के खिलाफ पुलिस ने कार्रवाई करते हुए खलटांका थाना क्षेत्र में नाकाबंदी के दौरान एक बोलेरो पिकअप वाहन से करीब 5 लाख रुपए से अधिक की अवैध शराब जब्त की है। मामले में बिहार के एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है।

पुलिस के अनुसार वाहन से कुल 170 पेटियों में 1980 लीटर अवैध देशी और विदेशी शराब बरामद की गई। जब्त की गई शराब में 150 पेटी बीयर और 20 पेटी देशी प्लेन शराब शामिल है। बरामद शराब की अनुमानित कीमत 5 लाख 7 हजार रुपए बताई गई है। इसके अलावा शराब परिवहन में प्रयुक्त लगभग 8 लाख रुपए कीमत की बोलेरो पिकअप वाहन को भी जब्त कर लिया गया है।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शकुंतला रूहल ने बताया कि मुखबिर से सूचना मिलने पर तत्काल एक टीम पानवा क्षेत्र की ओर रवाना की गई, जहां नाकाबंदी कर वाहनों की सघन जांच की गई। जांच के दौरान बोलेरो पिकअप को रोककर तलाशी लेने पर अवैध शराब बरामद हुई।

मामले में विकास पिता दीपेंसिंह चंद्रवंशी को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी मूल रूप से औरंगाबाद, बिहार का निवासी है और वर्तमान में दावलबेड़ी, थाना सेंधवा, जिला बड़वानी में रह रहा था।

पुलिस ने आरोपी के खिलाफ अपराध क्रमांक 61/26 के तहत आबकारी अधिनियम की धारा 34(2) के अंतर्गत मामला दर्ज किया है। आरोपी से पूछताछ जारी है तथा मामले की विस्तृत विवेचना की जा रही है।

नगर परिषद के कर्मचारी वेतन न मिलने पर धरने पर बैठे

माही की गूंज, बड़वानी।

जिले के अंजड़ नगर परिषद के सफाईकर्मी एवं अन्य कर्मचारी बुधवार दोपहर से धरने पर बैठ गए। यह प्रदर्शन पिछले दो-तीन माह से वेतन नहीं मिलने के विरोध में किया जा रहा है। कर्मचारियों ने परिषद कार्यालय के बाहर ÷वेतन नहीं तो काम नहीं÷ के नारे लगाए।

कर्मचारियों का कहना है कि लगातार वेतन न मिलने के कारण उनके सामने गंभीर आर्थिक संकट खड़ा हो गया है। नगर परिषद कर्मचारी एसोसिएशन के अध्यक्ष पवन उंटवाल ने बताया कि दो माह का वेतन बकाया है और तीसरा माह भी शुरू हो चुका है। उन्होंने यह भी कहा कि अधिकारियों द्वारा आगे वेतन भुगतान में रोक लगने की जानकारी दी गई है।

उंटवाल के अनुसार जब तक बकाया वेतन का भुगतान नहीं किया जाता, तब तक लगभग 150 कर्मचारी धरने पर बैठे रहेंगे। कर्मचारियों के काम बंद करने से नगर की आवश्यक सेवाएं, विशेषकर सफाई व्यवस्था, बुरी तरह प्रभावित होने की आशंका है। इस संबंध में सीएमओ रणजीत सिंह रावत ने स्पष्टीकरण देते हुए बताया कि वित्तीय वर्ष 2012-13 में टीडीएस कटौती में गड़बड़ी के कारण आयकर विभाग ने नगर परिषद के बैंक खाते बंद कर दिए हैं। उन्होंने कहा कि इस समस्या से वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत करा दिया गया है और बैंक खाते पुनः चालू करवाने की प्रक्रिया जारी है। सीएमओ ने बताया कि कर्मचारियों को जनवरी और फरवरी माह का वेतन दिया जाना शेष है।

खेलने-कूदने से खिलखिलाता है बचपन

नन्हे कंधों पर भारी-भरकम बस्ता, उनींदी आंखों में शत-प्रतिशत अंक पाने की जद्दोजहद, डिजिटल संसाधनों पर सर्च में जुटी नाज़ुक उंगलियां, कुल मिलाकर यह परिदृश्य है आधुनिक युग का, जिसने न केवल बचपन की सहजता छीन ली है बल्कि बच्चों को खेलकूद के मैदानों से भी दूर कर डाला है। यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन हेल्थ सीएस मॉट चिल्ड्रन हॉस्पिटल के सर्वेक्षणानुसार, प्रत्येक 10 में से 1 बच्चा सप्ताह में एक बार भी बाहर खेलने नहीं जाता। इसमें प्रमुख कारण है, बढ़ता स्क्रीनटाइम। स्कूली पढ़ाई के पश्चात ट्यूशन की भागम-भाग में इतना समय ही कहां मिलता है, जो बच्चों में बाहर जाकर खेलने की ललक शेष रहे? इसी कारण आजकल अधिकतर बच्चे आउटडोर खेल खेलने की बजाय सोशल मीडिया खंगालना अथवा ऑनलाइन गेम्स खेलना अधिक पसंद करते हैं।

अपनी अति व्यस्तता अथवा बच्चों को चोट लगने के भय से अनेक माता-पिता भी बच्चों को खेलने के लिए बाहर भेजने से गुरेज़ करते हैं। कुछ अभिभावकों को लगता है कि खेलकूद में समय बिताने से बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होगी, जबकि विशेषज्ञों के कथनानुसार, नियमित रूप से खेलना-कूदना बच्चों की स्मरणशक्ति बढ़ाता है। उनमें कड़ी मेहनत तथा समर्पण की भावना विकसित होती है, जिससे वे पढ़ाई में सर्वोत्तम परिणाम देने के साथ अपने नियमित कार्य भी अधिक कुशलतापूर्वक कर पाते हैं।

गहनतापूर्वक जांचें तो खेलकूद अपने आप में सर्वोत्तम व्यायाम है। मांसपेशियां मजबूत बनाने, रक्त संचार बेहतर करने, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने तथा संक्रामक रोगों से बचाव करने के साथ ये अच्छी नींद लाने में भी मददगार बनते हैं। छोटी आयु से ही खेलों में भाग लेने से जहां शारीरिक पुष्टता बढ़ती है वहीं टीम वर्क, अनुशासन, सहनशीलता, सुनने-दूसरे का दृष्टिकोण समझने, समझौता करने जैसे आवश्यक गुण भी विकसित होते हैं। खेलने-कूदने से आत्मविश्वास बढ़ता है, संचार शैली सशक्त होती है। बच्चे दूसरों के समक्ष खुलकर अपनी बात रखना सीख जाते हैं।

खेल बच्चों को आत्मनिर्भरता, दृढ़ता तथा बारी-बारी से काम करने का कौशल बढ़ाने में तो सक्षम बनाता ही है, व्यक्तिगत भावनाएं समझने तथा प्रबंधित करना सीखने के लिए भी उन्हें एक सुरक्षित स्थान प्रदान करता है। इससे जहां लचीलापन अपनाने तथा दूसरों के प्रति सहानुभूति रखने में सहायता मिलती है, वहीं रचनात्मकता व कल्पनाशीलता को भी अपेक्षित विस्तार मिलता है। खेलकूद नशे जैसी बुराइयों से दूर रखने में सहायक सिद्ध होते हैं।

'द लैंसेट' पत्रिका के एक अध्ययन में जापान के बच्चे सबसे अधिक स्वस्थ पाए गए। इसका श्रेय निश्चय ही उनके स्वास्थ्यवर्द्धक आहार एवं चुस्त दिनचर्या को जाता है। पाठशाला जाने के लिए बस की अपेक्षा वे पैदल चलना ज्यादा पसंद करते हैं। अपना कार्य स्वयंमेव निपटाना उनकी आदत में शामिल है, जबकि इस संदर्भ में भारत के बहुतेरे बच्चों की स्थिति कमोबेश विपरीत ही मिलेगी।

आधुनिक बच्चों में संवेदना दिनों-दिन कम हो रही है, वे नाकामी का सामना नहीं कर पाते, उनकी प्रॉब्लम सॉल्विंग क्षमता घट रही है; बाल मनोचिकित्सक इन सबके पीछे परिवर्तित जीवनशैली को मुख्य दोषी ठहराते हैं। समस्यायों से छुटकारा देश के शीर्ष संगठनों में शामिल 'एडुस्पॉट्स' की एक हेल्थ एवं फिटनेस स्टडी के अनुसार, देश में स्कूली बच्चों-किशोरों का स्वास्थ्य एवं फिटनेस का स्तर लगातार गिर रहा है। कम उम्र बच्चे भी मधुमेह, अस्थमा जैसी बीमारियों की चपेट में आ रहे हैं। देश के ताज़ा आर्थिक सर्वेक्षण के तहत, 2020 के दौरान भारत में 3.3 करोड़ से अधिक बच्चे मोटापे के शिकार थे। 2035 तक आंकड़ा 8.3 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है। शारीरिक सक्रियता का अभाव बच्चों का दैहिक लचीलापन कम कर रहा है। ऐसी स्थिति में उनका बाहर निकलकर खेलना और भी महत्वपूर्ण बन जाता है।

जॉयस मेयर ने कहा है, 'हम अपने परिवार को जो सबसे सुंदर तोहफ़ा दे सकते हैं, वह है खुद की अच्छी सेहत।' अभिभावकों के लिए ज़रूरी है कि समय निकालकर बच्चों को प्रतिदिन कम से कम तीस मिनट के लिए साइकिलिंग, रनिंग, जंपिंग आदि गतिविधियों का हिस्सा अवश्य बनाएं। मॉट पोल की सह-निदेशक सारा क्लार्क के मुताबिक़ पेड़ पर चढ़ना, साइकिल चलाना या झूले से फिसलना बच्चों के विकास के लिए अनिवार्य है। खेल के दौरान लगी छोटी-मोटी चोटें, दरअसल, बच्चों को समूचे तौर पर मज़बूत बनाने का कार्य करती हैं। इनसे आत्मविश्वास, सहनशीलता और समस्या सुलझाने की क्षमता बढ़ती है। तुलनात्मक तौर पर बीते बीस-पच्चीस वर्षों का जायज़ा लें तो शहरों का भूगोल काफी हद तक बदल चुका है, पहले की भांति बच्चों के खेलने के लिए अधिक स्थान उपलब्ध नहीं। ऐसे में विद्यालयों का दायित्व भी बढ़ जाता है कि शारीरिक शिक्षा पीरियड के तहत वे रोज़ाना एक-आध घंटा बच्चों के खेलने हेतु अवश्य सुनिश्चित करें।

दीपिका अरोरा

वास्तव में खेल बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खेलकूद से ही बचपन खिलता है, बच्चों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का आत्मबल मिलता है। प्रश्न समग्र विकास का है, क्यों न आभासी संसार में डूबे बच्चों का रुख़ खुले मैदानों की तरफ़ मोड़ा जाए, जहां उन्मुक्त सांस लेते हुए वे अपने व्यक्तित्व को सम्पूर्णता दे पाएं?

आदिवासी संस्कृति पर्व भगोरिया पर्व शांति पूर्वक संपन्न

क्षेत्र का पहला भगोरिया हाट होने से आशा के अनुकूल नही हुआ धंधा

माही की गूंज, आम्बुआ।

होलिका दहन पूर्व लगभग एक सप्ताह तक लगने वाले साप्ताहिक हाट बाजार के दिन भगोरिया (भोंगर्या) मेला आम्बुआ में पुलिस तथा प्रशासनिक व्यवस्था के तहत वगैर किसी परेशानी के संपन्न होने के समाचार है।

आदिवासी लोक संस्कृति पर्व भगोरिया जोकि एक खुशहाली का पर्व कहा जाता है क्षेत्र में रबी की फसलें तैयार होने की खुशी में वर्षों से आदिवासी समुदाय होलिका दहन से एक सप्ताह पूर्व साप्ताहिक हाट बाजार के दिन भगोरिया (भोंगर्या) मेले के आयोजन करते आ रहे हैं। उसी परम्परा को कुछ परिवर्तन के साथ आज भी समाज मनाता जा रहा है, इन मेलों में रंग बिरंगी पोशाकों में सजे धजे युवक युवतियां तथा छोटे बड़े सभी उत्साह से भाग लेते हैं। आम्बुआ में इस वर्ष का प्रथम भगोरिया पर्व संपन्न हुआ, ग्रामीणों ने जम कर झूले तथा खाने पीने का आनंद उठाया।

भगोरिया मेले में जहां कांग्रेस की ओर से आदिवासी विकास परिषद के प्रदेश उपाध्यक्ष महेश पटेल तथा भील सेना संस्थापक शंकर सिंह बामनिया तथा सर्व हिंदू सनातन धर्म समिति की ओर से अजय बघेल आदि ने भगोरिया मेले में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई तथा ढोल-मांदल की धुन पर गेर निकाली। इस वर्ष प्रदेश के बालाघाट, बैतूल तथा धार से आदिवासी संस्कृति की छटा बिखेरने के लिए मप्र शासन के संस्कृति विभाग की ओर से दल भेजे गए थे जिन्होंने लोक नृत्य से सभी का मन मोह लिया। मेले में पुलिस तथा अन्य प्रशासनिक अमले की माकूल व्यवस्था रही विशेष रूप से मेले के झूला क्षेत्र में क्यों यहां झगड़ा फसाद की संभावना अधिक रहती है।

भगोरिया पर्व संपन्न मगर मेला स्थल पर स्वच्छता अभियान की उड़ रही धज्जियां

किसी भी कार्यक्रम की सफलता तब मानी जाती है जब कार्यक्रम बगैर किसी विघ्न बाधा के पूर्ण हो जाए,साथ ही उसके उपरांत कार्यक्रम स्थल को पूर्व की भांति स्वच्छ बना दिया गया हो।क्षेत्र में एक दिन पूर्व आदिवासी संस्कृति के लोकपर्व भोंगरिया का प्रथम आगाज हुआ,दिन भर जहां ग्रामीणों ने धूमधाम से अपनी सांस्कृतिक विरासत को कायम रखते हुए है। आंनद लिया खाने पीने से लेकर झूले चकरी तथा आधुनिक मनोरंजन पर सामर्थ से अधिक खर्च किया, छोटे बच्चों से लेकर युवाओं युवतियों ही नहीं अपितु अपनी उम्र के अंतिम पड़ाव पर जा रहे और आगामी भगोरिया को देख भी सकेंगे या नहीं...? अपने कांपते हाथों तथा डगमगाते कदमों के साथ नाती-नातिन, पोते-पोतियों के सहारे भगोरिया मेले में पुरानी यादों को ताजा करते हुए आधुनिकता के दर्शन करने में पीछे नहीं रहे, लगभग दिन भर मेले का आनंद लिया और घर चले गए। उसी के साथ छोटे-बड़े वे व्यापारी जिनमें स्थानीय कम बाहरी क्षेत्रों से आए अधिक व्यापारी लाखों का धंधा कर गए। मगर उनके जाने के दूसरे दिन जब मेला स्थल को देखा गया तो मैदान तथा हाईस्कूल के पास से लेकर आम्बुआ - जोबट तिराहे के बस स्टैंड सीमा तक केवल और केवल कचरा ही कचरा बिखरा पड़ा था। क़स्बे के अंदर तो पंचायत के सफाई कर्मचारी साफ कर देंगे मगर मेला क्षेत्र में कौन सफाई करेगा। ठेकेदार आदि अपनी वसूली कर चले गए और अब वहां स्वच्छता अभियान की धज्जियां उड़ती दिखाई दे रही है यहां सफाई कौन करेगा...? यह विचारणीय प्रश्न है।

नवल सिंह डुडवे ग्राम पंचायत सचिव ने बताया कि, बाजार क्षेत्र में आज सफाई की गई है, मेला क्षेत्र में भी सफाई कर्मचारी सफाई करेंगे, अब परेशानी नहीं होगी क्योंकि पंचायत के पास कचरा उठाने वाले वाहन की व्यवस्था हो गयी है।

भारतीय मजदूर संघ ने तहसीदार सविता राठी को सौंपा ज्ञापन

माही की गूंज, अलीराजपुर।

भारतीय मजदूर संघ के 21 वें अखिल भारतीय त्रि-वार्षिक अधिवेशन के समापन के बाद, संगठन ने देशव्यापी स्तर पर सरकार को अपनी मांगों का ज्ञापन सौंपना शुरू कर दिया है। 6 से 8 फरवरी 2026 तक भगवान जगन्नाथ की नगरी पुरी (ओडिशा) में संपन्न हुए इस अधिवेशन में पारित प्रस्तावों के आधार पर, यह ज्ञापन माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और श्रम मंत्री मनसुख मंडाविया को संबोधित किया गया है।

मुख्य मांगें

न्यूनतम पेंशन और सामाजिक सुरक्षा पर जोर। ज्ञापन में श्रमिकों की ज्वलंत समस्याओं को उठाते हुए कई महत्वपूर्ण सुधारों की मांग की गई है। ईपीएस-95 पेंशन में भारी वृद्धि। वर्तमान में मिल रही 1000 रुपये की न्यूनतम पेंशन को बढ़ाकर 7500रुपये प्रतिमाह करने और साथ ही महंगाई भत्ता जोड़ने की मांग की गई है। इसके अलावा, पेंशनभोगियों को आयुष्मान भारत योजना से जोड़ने का भी प्रस्ताव है। ?श्रम कानूनों का सख्त कार्यान्वयनः 'अंत्योदय' की भावना के साथ सभी सेक्टरों में श्रम कानूनों को बिना किसी छूट के लागू करने की वकालत की गई है।?लेबर कोड पर आपत्तिः 'इंडस्ट्रियल रिलेशन कोड 2020 और 'ऑक्यूपेशनल सेफ्टी कोड 2020' में श्रमिकों से जुड़ी चिंताओं के तत्काल समाधान की मांग की गई है।

नियमितीकरण और मान्यता

आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को नियमित किया जाए, 50 वर्षों से मानदेय पर काम कर रही है। आशा कार्यकर्ता, पैसा मोबीलाइजर, मिड-डे मील रसोइयों, अतिथि शिक्षकों और आउटसोर्सिंग कर्मचारियों को 'कामगार' के रूप में मान्यता देने और उन्हें स्थाई करने की मांग प्रमुखता से उठाई गई है।

असंगठित क्षेत्र के लिए सुरक्षा कवच

बीएमएस ने विशेष रूप से हमाल, दिहाड़ी मजदूरों, पेट्रोल पंप कर्मियों और वेयरहाउस में काम करने वाले श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा की मांग की है। साथ ही, परिवहन क्षेत्र के चालकों और परिचालकों के लिए दुर्घटना बीमा, जीवन बीमा और वृद्धावस्था पेंशन सुनिश्चित करने का आग्रह किया गया है।

त्रिपक्षीय वार्ता को फिर से जीवित करने की अपील

ज्ञापन के माध्यम से सरकार से 'इंडियन लेबर कॉन्फ्रेंस' को तुरंत बुलाने और विभिन्न त्रिपक्षीय समितियों का पुनर्गठन करने को कहा गया है, ताकि श्रमिकों की समस्याओं का व्यावहारिक समाधान निकल सके।

प्रतिनिधिमंडल को मिला आश्वासन

अधिवेशन से पूर्व श्रम मंत्री के साथ हुई बैठक का हवाला देते हुए ज्ञापन में याद दिलाया गया है कि सरकार ने इन मुद्दों की जांच कर शीघ्र समाधान का भरोसा दिया था। अब देशभर के जिलाधिकारियों को ज्ञापन दिया गया हे ज्ञापन में राज्य कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष राजेश वाघेला ओर उनकी पूरी टीम, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता संघ से प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मंजुला लोहार, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता संघ की जिलाध्यक्ष कमला रावत, उपाध्यक्ष रेखा रावत, सरोज चौहान, वनिता चौहान, जिला सचिव रंजीता कनेश, संगीता डुडवे, वेस्ती बघेल, मनीषा कनेश, निर्मला चौहान, कमला तोमर, अम्पू भिड़े, पैसा मोबीलाइजर की टीम, मध्याह्न भोजन की टीम उपस्थित रही।

कलेक्टर की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक संपन्न

माही की गूंज, धार।

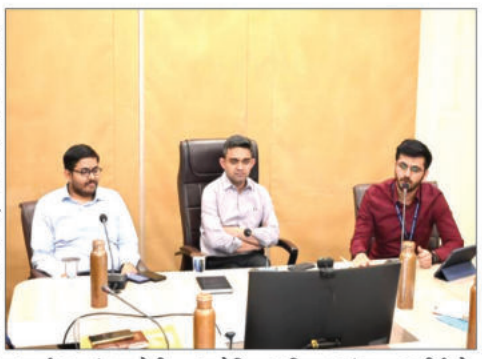

कलेक्टर प्रियंक मिश्रा की अध्यक्षता में आकांक्षी विकासखंड कार्यक्रम के अंतर्गत कलेक्टर कार्यालय धार के सभा कक्ष में बुधवार को समीक्षा बैठक आयोजित की गई। आकांक्षी विकासखंड कार्यक्रम कार्यक्रम नीति आयोग, भारत सरकार द्वारा संचालित एक महत्त्वाकांक्षी पहल है, जिसका उद्देश्य चयनित विकासखंडों में स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, कृषि एवं आधारभूत सुविधाओं के प्रमुख संकेतकों में त्वरित एवं लक्षित सुधार अभियान के रूप मे सुनिश्चित करना है। बैठक के दौरान परामर्शदाता दधीच इन्द्रोड़िया द्वारा आकांक्षी विकासखंड कार्यक्रम के 38 सूचकांक एवं संपूर्णता अभियान 2.0 अंतर्गत निर्धारित 6 सूचकांक की विस्तृत समीक्षा की गई। आकांक्षी विकासखंड तिरला के ग्राम पाडलिया, ज्ञानपुरा, खादानबुजुर्ग, भूतिबावड़ी, गंगानगर एवं सीतापाट व अन्य ग्रामों में संचालित आंगनवाड़ी केंद्र, उप स्वास्थ्य केंद्र, प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत निर्मित आवास, स्वच्छ भारत मिशन के कार्य तथा शासकीय विद्यालयों का भ्रमण के दौरान प्राप्त जमीनी स्थिति की जानकारी प्रस्तुत करते हुए संपूर्णता अभियान 2.0 के 6 माह से 6 वर्ष तक के बच्चों को आईसीडीएस अंतर्गत नियमित पूरक पोषण प्राप्त करने का प्रतिशत , आंगनवाड़ी केंद्रों पर पंजीकृत बच्चों के मासिक मापन (ऊँचाई/वजन) की दक्षता, संचालित आंगनवाड़ी केंद्रों में कार्यशील शौचालय की उपलब्धता, संचालित आंगनवाड़ी केंद्रों में स्वच्छ पेयजल सुविधा की उपलब्धता, विद्यालयों में बालिकाओं हेतु पर्याप्त एवं उपयोगी शौचालय सुविधाओं का प्रतिशत,गौवंशीय पशुओं का एफएमडी टीकाकरण प्रतिशत की जानकारी प्राप्त की। समीक्षा के दौरान जिन क्षेत्रों में प्रगति संतोषजनक पाई गई, उनकी सराहना की गई। वहीं जिन संकेतकों में अपेक्षित सुधार की आवश्यकता पाई गई, वहाँ संबंधित अधिकारियों को समयबद्ध कार्ययोजना तैयार कर लक्ष्यों की शीघ्र पूर्ति सुनिश्चित करने के लिए टीम बनाकर काम करने का कहा। बैठक में कलेक्टर मिश्रा द्वारा निर्देशित किया गया कि आकांक्षी विकासखंड तिरला में निर्धारित सभी संकेतकों में शत-प्रतिशत उपलब्धि सुनिश्चित करने हेतु सतत मॉनिटरिंग, नियमित मैदानी भ्रमण एवं अंतर्विभागीय समन्वय को प्राथमिकता दी जाए। उन्होंने कहा कि आकांक्षी विकासखंड कार्यक्रम का मूल उद्देश्य अंतिम पंक्ति तक सेवाओं की प्रभावी पहुँच सुनिश्चित करना है, जिससे तिरला विकासखंड को शीघ्र ही विकसित श्रेणी में स्थापित किया जा सके। बैठक में नीति आयोग, भारत सरकार के परामर्शदाता दधीच इन्द्रोड़िया, जिला पंचायत सीईओ अभिषेक चौधरी,संबंधित जिला स्तरीय अधिकारी, जनपद पंचायत तिरला सीईओ अतुल कोठारी एवं समस्त विकासखंड स्तरीय अधिकारी एवं आकांक्षी विकासखंड फेलो श्री दीपराज परमार उपस्थित रहे।

आखिर नूरी बाई भी हार गयी जिंदगी की जंग, उसी के साथ घटना का राज भी चला गया

माही की गूंज, आम्बुआ।

थाना क्षेत्र के ग्राम अडवाडा में पिछले हफ्ते एक महिला द्वारा अपने तीन बच्चों को कीटनाशक दवा चाय में पिला कर तथा स्वयं भी पी कर अस्पताल में जीवन मौत के बीच संघर्ष करने वाली भी आखिर दम तोड गई।

पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी अनुसार विगत 13 फरवरी को समीप ग्राम अडवाडा निवासी मुकेश भिलाला जो कि गुजरात मजदूरी करने गया था कि पत्नी नूरी बाई 30 वर्ष ने अज्ञात कारणों से चाय में कीटनाशक मिला कर पहले अपने तीन बच्चों क्रमशः सावित्री (7) तथा कार्तिक (5) एवं दिव्या (3) को पिलाई तथा बाद में स्वयं ने भी पी ली थी। जिन्हें इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया जहां पर तीनों मासूमों की मौत हो गई। जिनका सामूहिक अंतिम संस्कार 14 फरवरी को किया गया था। जबकि उनकी मां नूरी बाई 30 वर्ष पति मुकेश को दाहोद सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जहां पर 9 दिनों तक जिंदगी और मौत से जूझते रह कर 21 फरवरी की रात उसने भी दम तोड दिया। जिसका शव परीक्षण दाहोद में आम्बुआ पुलिस अधिकारी आदि के समक्ष किया गया तथा अंतिम संस्कार हेतु शव परिजनों को सौंप दिया गया है। उक्त घटना क्यों घटी इसका खुलासा नहीं हो सका क्योंकि महिला होश में नहीं आई थी जिस कारण उसके बयान नहीं हो सके और घटना के कारण उसके साथ ही चले गये।

विक्रम व्यापार मेले में अब तक बिके 6,662 गैर और हल्के परिवहन वाहन

माही की गूंज, उज्जैन।

जिले में लगे विक्रम व्यापार मेले में बुधवार तक 6,662 गैर और हल्के परिवहन वाहन बिक गए। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के निर्देश पर गैर और हल्के परिवहन वाहनों पर 50 प्रतिशत छूट जीवनकाल मोटरयान कर की दर में दी जा रही है।

आरटीओ संतोष मालवीय ने गुरुवार को बताया कि, विक्रम व्यापार मेले का आयोजन इंजीनियरिंग कॉलेज मैदान किया जा रहा है। मेले में विक्रित होने वाले गैर-परिवहन यानों (मोटर साईकिल, मोटर कार, ओमनी बस) तथा हल्के परिवहन यानों को जीवनकाल मोटरयान कर की दर में 50 की (मेला अवधि 15 फरवरी से 19 मार्च तक) छूट मध्यप्रदेश सरकार द्वारा प्रदान की जा रही है। मेले में 15 फरवरी से वाहनों का भौतिक सत्यापन करवाकर वाहनों को कर छुट प्रदान की जा रही है। 25 फरवरी की स्थिति में विक्रम व्यापार मेले में कुल 6,662 वाहनों की विक्री हुई है जिसमें 1,212 दोपहिया वाहन, 5,150 चार पहिया वाहन और 300 अन्य वाहन है।

मुख्यमंत्री के प्रस्तावित भ्रमण एवं भगोरिया पर्व हेतु सुव्यवस्थित पार्किंग कार्ययोजना

माही की गूंज, आलीराजपुर।

आज जिला आलीराजपुर के थाना आजाद नगर एवं उदयगढ़ क्षेत्र में मुख्यमंत्री का भ्रमण कार्यक्रम प्रस्तावित है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री आजाद नगर में शहीद चंद्रशेखर आजाद की पुण्यतिथि कार्यक्रम में श्रद्धासुमन अर्पित करेंगे और तत्पश्चात उदयगढ़ के पारंपरिक भगोरिया मेले में सम्मिलित होंगे।

इस अवसर पर जनसमूह के आगमन को दृष्टिगत रखते हुए, आलीराजपुर यातायात पुलिस द्वारा व्यापक पार्किंग एवं सुरक्षा कार्ययोजना तैयार की गई है, ताकि आमजन को आवागमन में किसी भी प्रकार की असुविधा न हो।

थाना आजाद नगर (भाबरा) क्षेत्र हेतु पार्किंग व्यवस्था

- वीआईपी एवं अतिविशिष्ट पार्किंगः इशाक मकरानी के भाई का खेत एवं माधव पेट्रोल पंप के सामने तौल काँटा क्षेत्र।

- आम्बुआ मार्ग से आने वाले वाहनः पंचायत कार्यालय परिसर एवं गड़ी रोड तालाब के सामने निर्धारित स्थान पर वाहन पार्क कर सकेंगे।

- कटिठवाडा मार्ग से आने वाले वाहनः पशुपतिनाथ मंदिर के पीछे एवं ग्लोबल इंटरनेशनल स्कूल मे पार्किंग निर्धारित की गई है।

- सेजावाड़ा मार्ग से आने वाले वाहनः भगोरिया मेला स्थल (हरिश भाबर का खेत, पूर्व की ओर अंधशाला टस्?ट की भूमि एवं बंद भारत पेटोल पम्?प) पर पार्किंग की व्यवस्था उपलब्?ध कराई गई है।

- उदयगढ़ से आने वाले वाहनः रेस्ट हाउस के पास इकराम पार्षद के घर के पीछे।

- आमखुट मार्ग से आने वाले वाहनः भुराघाटा में वाहन खड़े करने की अनुमति होगी।

थाना उदयगढ़ क्षेत्र हेतु पार्किंग व्यवस्था

- वीआईपी पार्किंगः बिजली डी.पी. ब्लॉक कॉलोनी, जो कार्यक्रम स्थल के निकट स्थित है।

- जोबट एवं बोरी मार्गः शीतला माता मंदिर के पीछे पार्किंग व?यवस?था रहेगी।

- राणापुर एवं आजादनगर मार्गः बावड़ी फाटक चौराहा पर वाहनों के ठहराव की व्यवस्था।

- खण्डालाराव एवं उत्ती मार्गः बीएसएनएल टॉवर के पास स्थित खुले खेत में वाहन पार्क किए जा सकेंगे।

- थांदला एवं झिरी मार्गः घटवालिया रोड़ बायपास पर विशेष पार्किंग जोन बनाया गया है।

आमजन हेतु महत्वपूर्ण निर्देश एवं अपीलः

1- सहयोग की अपेक्षाः पुलिस प्रशासन द्वारा यह व्यवस्था आपकी सुविधा और सुरक्षा के लिए की गई है। कृपया ड्यूटी पर तैनात पुलिस कर्मियों के निर्देशों का पालन करें।

2- अतिक्रमण मुक्त मार्गः मुख्य सड़कों और संकरे रास्तों पर वाहन खड़ा न करें। गलत स्थान पर पार्क किए गए वाहनों को यातायात बाधित करने की स्थिति में हटाया जा सकता है।

3- समय का प्रबंधनः भीड़-भाड़ से बचने के लिए कार्यक्रम के समय से थोड़ा पूर्व पहुँचें और निर्धारित पार्किंग स्थलों का ही चयन करें।

4- सतर्कताः किसी भी संदिग्ध वस्तु या व्यक्ति की सूचना तत्काल निकटतम पुलिस सहायता केंद्र या तैनात बल को दें।

भाजपा नेता मनोहर सेठिया के विरूद्ध गिरवी चांदी नहीं देने की हुई शिकायत

सीएम हेल्प लाइन में शिकायतकर्ता संतुष्ट और शिकायत बंद लेकिन टीआई अनुसार शिकायत में कोई निराकरण अब तक नही

माही की गूंज, पारा।
गजेंन्द्र चौहान

शिकायतकर्ता लच्छिया निनामा।

ये मध्यप्रदेश है भाई यहां दिन को रात और रात को दिन भी शासन व प्रशासन के नुमांइदे बता दे तो आमजन को उसे सहजता से स्वीकार करना ही पड़ेगा। जनसुनवाई/सीएम हेल्पलाइन व्यवस्था शासन ने लोगों की समस्याओं का त्वरित एवं उचित समाधान हो के उद्देश्य से लागू की गई। लेकिन यह शासन की व्यवस्था समाधान के लिए नहीं लेकिन प्रशासन ने इसे अपने हाथों की कठपुतली बना दिया गया है और आमजन के लिए समाधान की जगह यह योजना उर्फ व्यवस्था व्यवधान बन रही है। ऐसे में इस महत्वपूर्ण एवं महत्वकांशी योजना का कोई औचित्य नहीं बचता है। इसलिए आम जनता को गुमराह करने वाली जनसुनवाई/सीएम हेल्पलाइन योजना बंद कर देनी चाहिए ऐसी चर्चा आमजन करने लगे हैं।

यह सही है कि, चांदी-सोने के भावो में अनचाही वृद्धि होने से कई वर्ष पूर्व गिरवी रखी अपनी चांदी-सोने की रकमें को वापस लेने लोग, साहूकारों के पास पहुंच रहे हैं। इन शिकायतों में कुछ शिकायत सही तो कुछ शिकायतें गलत भी हो सकती है, हम इससे इनकार नहीं करते हैं। लेकिन जब मामला शिकायत के रूप में प्रशासन के पास आता है तो शिकायत की पुष्टि संपूर्ण रूप से करना चाहिए। और अगर शिकायत सही है तो साहूकार से शिकायतकर्ता को उसकी रकमें, पैसे जमा करवाने के बाद दिलाना चाहिए और अगर शिकायतकर्ता की शिकायत गलत पाई जाती है तो शिकायतकर्ता के विरुद्ध कार्रवाई की जानी चाहिए। लेकिन प्रशासनिक नुमाइंदे खासकर पुलिस विभाग ने जनसुनवाई/सीएम हेल्पलाइन में होने वाली शिकायतों को अपनी चांदी काटने का एक बड़ा माध्यम बना दिया है। तथा बिना निराकरण के ही जनसुनवाई की शिकायत पोर्टल पर शिकायतकर्ता को संतुष्ट होना बताकर बिना निराकरण के ही शिकायतें बंद कर दी जाती है।

जिसका एक उदाहरण एक भाजपा नेता के विरुद्ध चांदी की गिरवी रखी रकम नहीं देने पर हुई शिकायत को पोर्टल पर बंद बता दिया गया, लेकिन असल में शिकायत का कोई निराकरण नहीं हुआ।

मामला यह की जनसुनवाई अंतर्गत कलेक्ट्रेट झाबुआ में 20 जनवरी को रामा ब्लॉक के ग्राम धमोई निवासी लच्छिया पिता तोलिया निनामा ने राणापुर के वरिष्ठ भाजपा नेता पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष एवं साहूकार मनोहर सेठिया के विरुद्ध एक शिकायत दर्ज की गई। जिसमें बताया कि, मनोहर सेठिया के पास कुल 5 किलो चांदी गवाहो के समक्ष गिरवी रखी गई थी, जिसमें एक किलो चांदी 15 हज़ार व बाकी चार किलो चांदी की विभिन्न रकमें 12 हज़ार रुपए कुल 63 हज़ार में गिरवी रखी हुई थी। उक्त गिरवी रखी गई चांदी की रकमें को 2025 से लेने जा रहा हूं, लेकिन मनोहर सेठिया कहता है मैंने मकान बनाया तो चोपडे इधर-उधर हो गए नहीं मिल रहे है, कह कर हमेशा टाल देता है। और पुलिस में भी शिकायत करने के बाद पुलिस कोई कार्रवाई नहीं कर रही है, शिकायतकर्ता लच्छिया ने बताया।

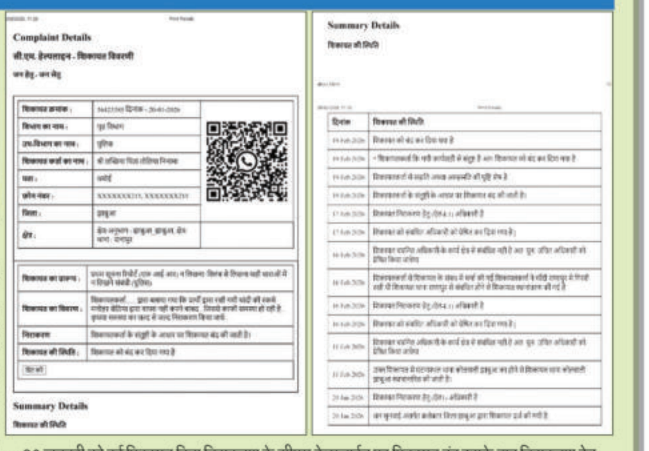
Complaint Details
Summary Details

20 जनवरी को हुई षिकायत बिना निराकरण के सीएम हेल्पलाईन पर षिकायत बंद उसके बाद निराकरण हेतु राणापुर पुलिस शिकायतकर्ता को थाने पर बुलाकर कर रही गुमराह।

बिना निराकरण के 19 फरवरी को शिकायत बंद उसके बाद पुलिस बार-बार बुला रही थाने पर

सबसे बड़ा खेल यहां यह की 20 जनवरी को की गई शिकायत में 20 जनवरी से 19 फरवरी तक 14 कॉलमों में पोर्टल पर अपनी गतिविधि शिकायत के संबंध में दर्शाइ गई है। जिसमें 16 फरवरी में शिकायतकर्ता से शिकायत के संबंध में चर्चा की गई, शिकायतकर्ता ने चांदी राणापुर में गिरवी रखी थी शिकायत, थाना राणापुर से संबंधित होने से शिकायत स्थानांतरण की गई, कॉलम में दर्शाया गया। वहीं 19 फरवरी को चार कॉलम सीएम हेल्पलाइन शिकायत विवरण पोर्टल पर दर्शाया गया इसके पहले कालम में शिकायतकर्ता के संतुष्ट के आधार पर शिकायत को बंद करना बताया। तो वही उसके बाद दूसरे कॉलम में शिकायतकर्ता से सहमति अथवा असहमति की पुष्टि शेष है दर्शाया गया। वहीं उसी 19 फरवरी को ही तीसरे व चौथे कॉलम में शिकायतकर्ता कि की गई कार्यवाही से संतुष्ट है अतः शिकायत को बंद कर दिया गया दर्शाया गया। वहीं सामने यह आ रहा है कि, यह शिकायत बिना किसी शिकायतकर्ता की संतुष्टि के पहले प्रशासनिक नुमाइंदों ने पोर्टल पर शिकायत को बंद कर दिया गया। वहीं शिकायत बंद करने के बाद 21 व 23 फरवरी को शिकायतकर्ता लच्छिया निनामा को शिकायत के निराकरण हेतु राणापुर थाने पर बुलाया और 2 से 3-3 घंटे तक थाने पर बिठाये रखा। तथा मनोहर सेठिया को राणापुर पुलिस अधिकारी ने फोन लगाया तो राणापुर में नहीं होना बताया व दोनों ही दिन लच्छिया थाने पर बैठ-बैठकर आया। वहीं बुधवार 25 फरवरी को लच्छिया ने प्रतिनिधि को बताया कि, मैं 21 व 23 फरवरी को राणापुर पुलिस द्वारा बुलाने पर थाने पर गया और मनोहर सेठिया को पुलिस ने फोन लगाया तो दोनों ही दिन वह थाने पर नहीं आया और अब भी पुलिस मुझे फोन लगा रही है कि, मैं थाने पर आऊं।

वहीं जब जनसुनवाई में की गई शिकायत की पोर्टल पर हकीकत जानी तो, 19 फरवरी को ही जिस शिकायत को शिकायतकर्ता को संतुष्ट कर शिकायत को बंद करना बता दिया गया और उसके बाद राणापुर पुलिस शिकायतकर्ता को गुमराह कर शिकायत के निराकरण हेतु थाने पर बुलाया जा रहा है। जब मामले में राणापुर टीआई दिनेश रावत से चर्चा की तो बताया, मामले में कोई निराकरण अब तक नहीं हुआ है, शिकायतकर्ता को गिरवी रखी रकम का प्रमाण व बिल देना आवश्यक होगा।

यहां यह कि, शिकायत सही है या गलत यह तो जांच का विषय है परंतु जिस शिकायत को 19 फरवरी को शिकायत पोर्टल पर प्रकरण को बंद कर दिया गया, वहीं पुलिस प्रकरण बंद बताकर निराकरण हेतु शिकायतकर्ता को थाने पर बुला रही? तथा मीडिया को भी जिस शिकायत को पोर्टल पर बंद बता रही है उसका निराकरण अब तक नहीं हुआ है पुलिस स्वयं ही बता रही है। एसे में सरकार की यह महत्वाकांक्षी सीएम हेल्पलाइन योजना महज लोगों को गुमराह करने वाली योजना बन गई है और पुलिस व प्रशासन जो कहे उसे ही सही मानने को मजबूर होना पड़ रहा है। चाहे दिन को रात, रात को दिन कह दे उसे भी मानना होगा।

सत्र एक और अंकसूची दो...? आंगनवाड़ी सहायिका पद को लेकर हुई दर्ज आपत्ति में सामने आया बड़ा खेल

माही की गूंज, पेटलावद।
राकेश गेहलोत।

शासन-प्रशासन किसी भी पद पर नियुक्ति के लिए आवेदन स्वीकार करने की प्रक्रिया आनलाईन व्यवस्था कर रही हैं। ताकि किसी प्रकार की हेरा-फेरी नहीं हो पाए। विगत कुछ माह पूर्व महिला बाल विकास विभाग के अंतर्गत जिले भर में आंगनवाड़ियों में हुई आंगनवाड़ी सहायिका पदो की भर्ती के लिए आवेदन स्वीकार किए गए थे। जिसमें विभाग अनुसार सभी योग्य प्रार्थियो को नियुक्ति दी गईं। जबकि कई नियुक्तियों पर आपत्ति दर्ज करवाई गई है। जिसमें पेटलावद विकास खंड में एक बड़ा मामला सामने आया।

मामला यह कि, पद पर जिस महिला को नियुक्ति मिली उसके द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजो पर एक अन्य प्रार्थिया ने आपत्ति दर्ज करवाई। जिसमें अंकसूची की हेरा-फेरी का बड़ा खेल उजागर हुआ है।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल
BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL
HIGHER SECONDARY SCHOOL CERTIFICATE EXAMINATION (10+2) 2023
SUPPLEMENTARY JULY-2023
MARKSHEET CUM-CERTIFICATE
S.NO. 772762

मध्यप्रदेश शिक्षा मंडल भोपाल की सत्र 2023 की अंकसूची।

ADMIT CARD
BOARD OF SECONDARY EDUCATION
MADHYA BHARAT GWALIOR (M.P.)
MAIN EXAMINATION-2023

बोर्ड ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन मध्य भारत ग्वालियर की सत्र 2023 की अंकसूची।

एक ही सत्र में दो प्राइवेट संस्थाओं से प्राप्त की अंकसूची

अभ्यर्थी सपना गरवाल निवासी ग्राम रतांबा विकास खंड पेटलावद में अपनी और से विभाग में दर्ज करवाई गई आपत्ति में बताया कि, ग्राम रतांबा में आंगनवाड़ी सहायिका पद की अभ्यर्थी एवं एक अन्य अभ्यर्थी उर्मिला मैड़ा आवेदन क्रमांक 250734436 द्वारा आवेदन किया गया था। आवेदन के साथ दी गई शैक्षणिक जानकारी पर लिखित आपति दर्ज करवाई है। आपत्ति में बताया गया कि, श्रीमती उर्मिला मैड़ा ने अपनी कक्षा 12 वीं की अंकसूची के संबंध में निम्नलिखित विरोधाभासी जानकारी दी है। विभागीय पोर्टल पर उन्होंने रोल नंबर 6089121001 दर्ज किया है और प्राप्तांक 85.33 प्रतिशत बताया है। जबकि उनकी वास्तविक अंकसूची में रोल नंबर 235134274 है, जिसमें भी 62 प्रतिशत अंक प्राप्त हैं। आश्चर्य जनक रूप से, दोनों रोल नंबर अलग-अलग बोर्ड से संबंधित हैं और उन्होंने एक ही शैक्षणिक वर्ष 2023 में दोनों बोर्ड से कक्षा 12वी उत्तीर्ण की है...? जो कि शैक्षणिक नियमों के विरुद्ध है। यह स्थिति उनकी शैक्षणिक प्रमाणिकता पर गंभीर प्रश्नचिन्ह लगाती है और चयन प्रक्रिया की निष्पक्षता को प्रभावित कर सकती है। आपत्तिकर्ता सपना गरवाल ने मामले की गहन जांच कर आवश्यक कार्रवाई की मांग की है।

एक सत्र में दो संस्थाओं से प्राइवेट पढ़ाई करने का प्रावधान नहीं

आरटीआई (राइट टू एज्युकेशन) कानून के तहत कोई भी व्यक्ति एक सत्र में एक नियमित ओर एक प्राइवेट संस्था से पढ़ाई कर सकता है। लेकिन एक ही सत्र में दो नियमित या दो प्राइवेट संस्था से पढ़ाई नहीं कर सकता है, ये नियमो के विपरीत है। उक्त मामले में आंगनवाड़ी सहायिका पद हेतु कक्षा 12 वी की जो अंकसूची पेश की वो बोर्ड ऑफ सेकेंडरी मध्य भारत ग्वालियर से साइंस जैसे विषय से प्राइवेट पढ़ाई कर सत्र 2023 की अंकसूची 80 प्रतिशत से अधिक अंकों से पास होने वाली प्राप्त की। ओर नौकरी के लिए इसी अंक सूची का उपयोग किया गया, जिसके आधार पर नंबर भी दिए गए। दूसरी ओर आपत्तिकर्ता की ओर से वर्ष 2023 की ही अंक सूची जो कि 60 प्रतिशत से अधिक अंकों से पास कर प्राप्त की हुई अंक सुची आपत्ति के साथ मय रोल नंबर के पेश की जो मध्यप्रदेश शिक्षा मंडल भोपाल से की गई। दो अलग-अलग संस्थाओं से एक ही सत्र में दो अंकसूची जांच का विषय हैं।

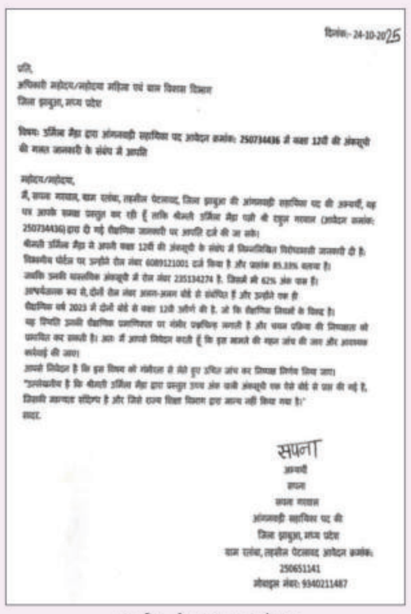
दिनांक- 24-10-2025
सपना

आपत्तिकर्ता द्वारा प्रस्तुत आवेदन।

मान्यता को लेकर संशय

बोर्ड ऑफ सेकेंडरी मध्य भारत ग्वालियर की अंक सूची को लेकर आनलाइन जानकारी जुटाई तो पता चला कि, उक्त संस्था मध्यप्रदेश शासन द्वारा मान्यता प्राप्त संस्था नहीं है। जिससे उक्त संस्था की अंकसूची को स्वीकार करने से पूर्व जांच कर्ताओं ने इसकी छानबीन नहीं की ये बड़ा प्रश्न है...? बोर्ड ऑफ सेकेंडरी मध्य भारत ग्वालियर की अंकसूची मध्यप्रदेश सरकार मान्य करती है की नहीं इस पर भी संशय की स्थिति हैं।

आपत्तिकर्ता सपना गरवाल ने अपनी आपत्ति में इस विषय को गंभीरता से लेते हुए उचित जांच कर निष्पक्ष निर्णय लेने की मांग की है। उर्मिला मैड़ा द्वारा प्रस्तुत उच्च अंक वाली अंकसूची एक ऐसे बोर्ड से प्राप्त की गई है, जिसकी मान्यता संदिग्ध है और जिसे राज्य शिक्षा विभाग द्वारा मान्य नहीं किया गया है।

भगोरिया हाटों में लगने वाले झूलों पर क्या है प्रशासन की नजर...?

महज कुछ घंटों में खुलने और लगने की प्रक्रिया कितनी मजबूत....? क्षमता से अधिक लोगों को बैठाकर चल रहे झूले

माही की गूंज, झाबुआ।
मुजम्मिल मंसुरी

आदिवासी अंचल में मंगलवार से शुरू हुए भगोरिया पर्व की धूम देखी जा रही है। अब इस पूरे सप्ताह अंचल में लगने वाले साप्ताहिक हाट बाजार भगोरिया पर्व के रूप में अलग-अलग स्थानों पर मनाए जाएंगे। भगोरिया पर्व यूं तो आदिवासी शैली, परम्परा और अंचल का महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पर्व माना जाता है। इस पर्व के दौरान आदिवासी समाज में अपूर्व उत्साह दिखाई पड़ता है। इस पर्व के दौरान पूरे एक सप्ताह तक बाजारों में उत्साह व उल्लास की चमक दिखाई पड़ती है। जगह-जगह मेलों का आयोजन होता है। इन मेलों में यूं तो साप्ताहिक हाट बाजार ही होते है, लेकिन इस पर्व को लेकर हाट बाजार में आने वाले व्यापारी अपनी अलग ही तैयारी रखते है। भगोरिया पर्व के हाटों में बाजार की रोनक बढ़ जाती है और खूब व्यापार व्यवसाय चलता है। जमकर भीड़ उमड़ती है और उल्लास के रंग में रंग जाती है। इन्ही हाट बाजारों में भगोरिया पर्व को देखते हुए झूले-चकरी भी लगते है। भगोरिया हाटों में लगने वाले इन झूलों की संख्या दर्जनों में होती है। भगोरिया हाटों में आने वाले लोग इन झूलों का जमकर लुत्फ उठाते है।

हम यहां बताते चले कि, अभी महज एक माह पूर्व ही झाबुआ में लगे महाराज के मेले में एक बड़ा हादसा देखने को मिला था। एक ड्रेगन झूला मेले के दौरान चलते हुए टूट कर अचानक गिर गया था। हालांकि इसमें कोई जनहानी नहीं हुई लेकिन कई स्कूली बच्चें इस हादसे का षिकार होकर गंभीर घायल हो गए थे। हादसे का कारण झूले के फिटनेस, क्षमता से अधिक लोगों को झूले में बैठाने, लापरवाही पूर्वक झूला चलाने जैसे तमाम आरोप लगे। उक्त हादसे में तमाम तरह की लापरवाहियां सामने दिखाई दे रही थी लेकिन उक्त हादसे में कार्रवाई के नाम पर जिला प्रषासन की तरफ से महज लीपा-पोती ही होती दिखाई दी। केवल झूला संचालक पर ही एफआईआर दर्ज की गई और इस हादसे से जुड़े तमाम जिम्मेदारों को बचाते हुए मामला ठंडे बस्ते में डालकर रफा-दफा कर दिया गया।

चूंकि यह हादसा भगोरिया पर्व के महज एक माह पूर्व ही हुआ है तो इसे इतनी आसानी से तो नजर अंदाज जिला प्रषासन द्वारा नहीं किया जाना चाहिए था। क्योंकि बड़े भगोरिया हाटों में इन झूलों की संख्या कभी-कभी 50 से अधिक हो जाती है। इन झूलों में झूलने वालों की संख्या का तो आप अंदाजा भी नहीं लगा सकते। मगर इन भगोरिया मेलों में लगने वाले झूलों में सुरक्षा मानकों को जमकर नजर अंदाज किया जाता है। पहला तो यह कि, इन झूला संचालकों के पास भगोरिया मेले में झूला लगाने को लेकर कोई परमीषन नहीं होती है। चूंकि भगोरिया पर्व या मेला जहां भी लगता है वहां सिर्फ एक दिवसीय ही लगता है। लगातार सात दिनों तक यह मेला अपना स्थान रोज बदलता है। इसलिए यह संभव ही नहीं कि, मेलों में झूले लगाने के लिए परमीषन कब और कितने दिनों की ली जाए। इस व्यवस्था के लिए शायद जिला प्रषासन के पास भी कोई रणनीति दिखाई नहीं देती। मगर हर रोज झूला व्यवसायी अपने झूले इस पर्व के दौरान लगातार अलग-अलग जगहों पर कसते और खोलते दिखाई देते है। यह सवाल इसलिए भी है कि, एक झूला संचालक लगभग सभी सात भगोरिया हाटों में अपना झूला लगाने का लक्ष्य लेकर चलता है। वह महज कुछ घंटों में अपना झूला भगोरिया हाटों में कस भी देता और फिर महज कुछ घंटों में उसे पूरी तरह से खोल भी लेता। यह कसरत वह लगातार भगोरिया के सात दिनों तक करता रहता है। इसी कसमकस में यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि, रोज खुलने और कसने की इस प्रक्रिया में झूले की मजबूती का किस तरह खयाल रखा जाता होगा...?

मगर इस गंभीर मुद्दे को लेकर जिला प्रषासन अब तक गंभीरता तो ठीक औपचारिकता से भी लेता दिखाई नहीं दे रहा है। भगोरिया हाट बाजारों में लगने वाले झूले किन मापदंडों के हिसाब से लग रहे है इसको लेकर जिला प्रषासन ने किसी तरह की कोई गाइडलाईन जारी ही नहीं की है। हालांकि यह जरूर है कि, जिले में लगने वाले भगोरिया हाट बाजारों में सुरक्षा के मद्दे नजर पुलिस बल जरूर दिखाई दे रहा है। मगर झूलों में झूलने वालों की सुरक्षा तो पूरे जिले में राम भरोसे ही दिखाई दे रही है। यह साफ दिखाई दे रहा है कि, जिला मुख्यालय पर हुए झुला हादसे के बाद भी जिला प्रषासन ने किसी तरह का कोई सबक नही लिया। अब अगर भगोरिया हाट बाजारों में मेले में लगने वाले झूलों में कोई हादसा होता है तो वह सरासर ही जिला प्रषासन की लापरवाही और निकम्मापन ही माना जाएगा। क्योंकि असल हकीकत तो मेले में झूलों की देखने को मिल रही है वह गंभीर ही नहीं अतिगंभीर भी है। भगोरिया मेलों में लगने वाले यह झूले अधिकतर तो हाथ से चलने वाले होते है, लेकिन बावजूद इसके इनमें हादसों से इंकार नही किया जा सकता। बहुत बड़ा कारण जो देखने को मिल रहा है वह यह कि जिस झूले की पालकी में महज 3 लोगों के बैठने की क्षमता है उसमें झूला संचालक लापरवाही पूर्व 5 या उससे अधिक लोंगों को बैठा रहे है। एक झूले में अगर 12 पालकी है और हर पालकी में क्षमता से 2 या तीन लोगों को अधिक बैठाया जा रहा है तो सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि झूले पर कितना अतिरिक्त भार पड़ रहा होगा? और फिर रोज खुलने और जुड़ने वाले झूले की कसावट कितनी मजबूर होगी?

मगर भगोरिया मेलों में लगने वाले झूलों और झूला संचालकों को रोकने वाला कोई अब तक मैदान में दिखाई नहीं दिया है। ना ही प्रषासन ने इसे स्वतः संज्ञान में लेते हुए कोई कदम उठाए है। ना ही किसी आदिवासी संघ या संगठन का इस ओर ध्यान है। ना कोई नेता ना कोई राजनीतिक पार्टी इसे लेकर गंभीर है। जबकि यह सारे लोग और संस्थाएं वहीं भगोरिया मेले के बीच मौजूद है और मेले का आनंद लेते दिखाई दे रहे है। राजनीतिक पार्टियां भगोरिया में गैर निकालती दिखाई दे रही है। प्रषासनिक अमला अपनी ड्यूटी टाईम पास के तौर पर करता दिखाई दे रहा है।

ईश्वर ना करे भगोरिया मेले में अगर कोई झूला पूर्व की तरह टूटता है तो फिर क्या होगा...? प्रषासन सांप निकलने के बाद लाठी पीटता नजर आए तो आदिवासी संघ और संगठन प्रषासन के नाम मातम करते नजर आएंगे। रही बात राजनीतिक दलों व नेताओं की तो वह तो अपनी पुरानी आदतों पर हमेषा कायम रहे है, वे अपनी राजनीतिक रोटियां सेकेगें। मगर नुकसान किसका होगा...? बदनाम भगोरिया जैसी आदिवासी संस्कृति होगी...?

माही की गूंज की यही अपील है कि, पर्व को उत्साह और उल्लास के साथ मनाए, लेकिन अपनी सुरक्षा का ख्याल भी खुद ही रखें। मेलों में लगने वाले झूलों में क्षमता से अधिक न बैठे और ना ही अपने परिचितों को बैठने दें। सुरक्षा मानकों को अपनाएं और जीवन सुरक्षित बनाए। प्रषासन या पुलिस अपनी जिम्मेदारी निभाए या ना निभाए, एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में आप अपनी जिम्मेदारी जरूर निभाए। इसी के साथ जिलेवासियों को भगोरिया पर्व के साथ ही रंगोत्सव की ढेर सारी शुभकामनाएं...

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा। मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422